R.N.I. No.: UTTHIN/2015/63078

डाक पंजीयन :- UA/DO/DDN/25/2021-2023

श्रमयोग पत्र

सेवा में

.....

.....

.....

.....

वर्ष : 08 अंक : 05 (हिन्दी मासिक) देहरादून, 01 अगस्त 2022 मूल्य - 5.00 ₹ प्रति पृष्ठ-8 वार्षिक मूल्य -100 ₹

क्या हेलंग की घसियारियों को न्याय मिलेगा

सल्ट में ज्ञापन सौंपते हुए रचनात्मक महिला मंच के सदस्य।

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

15 जुलाई के दिन जोशीमठ के निकट स्थित हेलंग गांव की महिलाओं से सीआईएसएफ एवं पुलिस द्वारा घास छीनने व पुलिस द्वारा उन्हें छः घण्टे हिरासत में रखने के कारण उत्तराखण्ड के लोग बेहद आक्रोशित है। इस घटना के विरोध में एक अगस्त के दिन हेलंग एक जुटता मंच के आव्हान पर उत्तराखण्ड राज्य के जिला एवं तहसील मुख्यालयों पर विभिन्न जन संगठनों व आन्दोलनकारियों द्वारा धरना, प्रदर्शन करते हुए ज्ञापन सौंपे गये।

ज्ञापन में मांग कि गयी कि महिलाओं से घास छीनने, उन्हें छह घंटे तक हिरासत में रखने और डेढ़-दो साल की बच्ची को एक घंटे तक कस्टडी में रखने वाले सीआईएसएफ और पुलिस कर्मियों को निलंबितकर, उनके खिलाफ वैधानिक कार्यवाही अमल में लायी जाये, इस मामले में पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर उत्पीड़ित महिलाओं के विरूद्ध अभियान चलाये हुए चमोली के जिलाधिकारी-श्री हिमांशु खुराना को तत्काल उनके पद से हटाया जाये और पहली बार जिलाधिकारी नियुक्त होने के बाद ऐसी पूर्वाग्रह युक्त कार्यवाही करने को ध्यान में रखते हुए उन्हें किसी सार्वजनिक पद पर नियुक्त न किया जाये, वन पंचायत नियमावली का उल्लंघन करके ली गयी वन पंचायत की तथा कथित स्वीकृति को रद्द किया जाये, इस अवैध अनुमति को आधार बना कर पेड़ काटने वालों के खिलाफ वैधानिक कार्यवाही की जाये। इसी तरह ग्राम सभा की भी गुपचुप ली गयी तथा कथित अनुमति को निरस्त किया जाये, टीएचडीसी के विरूद्ध मलवा नदी में डालने और पेड़ काटने के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर, वैधानिक कार्यवाही अमल में लाई जाये। टीएचडीसी व अन्य परियोजना निर्माता कंपनियों के कामों की जनता की भागीदारी के साथ मॉनिटरिंग (अनुश्रवण) की व्यवस्था की जाये व हेलंग प्रकरण की जांच, उच्च न्यायालय के सेवारत अथवा सेवानिवृत न्यायाधीश से करवाई जाये।

हेलंग एकजुटता मंच के आवाहन पर जिला एवं तहसील मुख्यालयों पर धरना, प्रदर्शन व ज्ञापन की खबरे निरन्तर आ रही है। देहरादून में हुए कार्यक्रम मे बोलते हुए उत्तराखण्ड महिलामंच कि अध्यक्षा कमला पन्त ने कहा कि यहाँ की सरकारों ने पहाड़, नदियों के किनारे व यहाँ की पूरी प्राकृतिक सम्पदा को बेच दिया है। उन्होंने कहा की हेलंग में हुई घटना ने उत्तराखण्ड की प्रत्येक महिला को शर्मसार किया है। उन्होने दोषियों को अति शीघ्र दण्डित करने की मांग की।

इस अवसर पर सल्ट विकास खण्ड में रचनात्मक महिला मंच ने उप-जिलाधिकारी कार्यालय पर प्रदर्शन करते हुए उप-जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। इस अवसर पर बोलते हुए रचनात्मक महिला मंच की अध्यक्ष निर्माला देवी ने कहा कि हेलंग में जिस तरह सीआईएसएफ एवं पुलिस द्वारा हमारी बहिन मंदोदरी देवी से घास छीना गया वह उत्तराखण्डी अस्मिता एवं महिला शक्ति का अपमान है।

निर्माला देवी ने कहा कि रचनात्मक महिला मंच, टीएचडीसी प्रशासन व स्थानीय प्रशासन द्वारा की गयी इस तानाशाही की घोर निन्दा करता है। उन्होने राज्य सरकार से दोशियों को सजा देने की मांग की।

मंच द्वारा समस्याओं को लेकर हस्ताक्षर अभियान

अपनी समस्याओं को लेकर रचनात्मक महिला मंच द्वारा जुलाई माह में मांगपत्र तैयार कर सल्ट विकास खण्ड के अनेक गांवो में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। निम्न ज्ञापन को शीघ्र ही विधायक को सौंपा जायेगा।

सेवा में,

श्रीमान महेश सिंह जीना

विधायक, सल्ट

उत्तराखण्ड

विषयः समस्याओ से निजात दिलाने हेतु आग्रह।

महोदय,

हम आपको अवगत कराना चाहते हैं कि रचनात्मक महिला मंच सल्ट विकास खण्ड के 100 गाँवों की लगभग 1000 महिलाओं का संगठन है। मंच के माध्यम से समाधान की उम्मीद में हम आपके सम्मुख क्षेत्र की निम्न समस्याएं रख रहे हैं।

1. सामुदायिक चिकित्सा केन्द्र देवायल में स्टाफकी भारी कमी है। वहाँ जाने पर न उचित ईलाज मिलता है न दवाएं मिलती हैं। छोटी-बड़ी हर बीमारी में रामनगर या काशीपुर भागना पड़ता है। इससे गरीब परिवारों पर भारी आर्थिक बोझ पड़ता है।

2. घर-घर नल योजना के अन्तर्गत कई गांवों में घर- घरों में नल लगे हैं, परंतु उनमें से कई घरों मे तो कभी पानी आया ही नही व शेष में भी नियमित रुप से पानी नहीं आ रहा है। जिससे ग्रामीण, विशेषकर महिलाएं बहुत परेशान हैं।

3. क्षेत्र के कई गांवों के पक्की सड़क से जुड़े होने के बाद भी उन गांवों तक गैस सिलेण्डर की गाड़ी नही आती, जिस वजह से महिलाओं व बच्चों को सिलेण्डर सिरों पर रखकर दूर-दूर तक ढोने पड़ते हैं। इससे दुर्घटना होने का डर बना रहता है व परिवार के लिए सिलेण्डर का दाम 200-300 रूपये बढ़ जाता है।

4. सल्ट क्षेत्र के कई गांवों में पेड़ों में बिजली के तार उलझे हुए हैं। इससे वर्षा के मौसम में दुर्घटना होने का भय है। साथ ही साथ अधिकतर गांवों में कभी नियमित रूप से बिजली मीटर रीडिंग नोट नहीं होती है व बिजली बिलों में भारी अनियमितता है।

5. कई मोटर मार्ग बुरी तरह क्षितग्रस्त है जिससे अनेक दुर्घटनाएं भी हो चुकी हैं।

महोदय, इन समस्याओं के बारे में सम्बंधित विभागों को कई बार बताने के बाद भी समाधान नही हो रहा है। जिस वजह से हमारा जीवन तनावपूर्ण व बोझिल होता जा रहा है। आपसे निवेदन है कि उक्त समस्याओं का अतिशीघ्र समाधान करवाने का कष्ट करें। हम आपके आभारी रहेंगे।

निवेदक

रचनात्मक महिला मंच, सल्ट (अल्मोड़ा)

हमारी पाती

प्रिय साथियो,

श्रमयोग पत्र के आठवें वर्ष का पांचवा अंक लेकर हम आपके बीच हैं। श्रमयोग समुदाय, रचनात्मक महिलामंच, महिला समूहों व बालमंचो में श्रमयोगपत्र निरन्तर पढ़ा जा रहा है। श्रमयोग समुदाय के सदस्य, महिलायें व बच्चे पत्र में निरन्तर लिख रहे हैं। इस तरह पढ़ने-लिखने की संस्कृति बन रही है और हम सब मिलकर सामुदायिक पत्रकारिता की मुहीम को लगातार मजबूत कर रहे हैं।

जुलाई माह में श्रमयोग के कार्यक्षेत्र में अनेक गतिविधियाँ हुई। रचनात्मकम हिलामंच द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र देवायल में स्वास्थ सुविधाओं का अभाव, घर-घर नल योजना के अन्तर्गत नलों में पानी न आना, क्षेत्र के कई गांवों के पक्की सड़क से जुड़े होने के बाद भी उन गांवों तक गैस सिलेण्डर की गाड़ी का न आना, आन्तरिक मोटर मार्गों का बुरी तरह क्षितग्रस्त होना जैसे मुद्दों पर ज्ञापन तैयार कर हस्ताक्षर अभियान चलाया गया, मंच द्वारा किचन गार्डन हेतु अपने सदस्यों को उपलब्ध कराये जारहे बीजों पर चर्चा हुई, श्रम-उत्पाद का भुगतान हुआ, वृक्षारोपण की तैयारी की गई (हम अपने कार्यक्षेत्र में वृक्षारोपण अगस्त माह में करते हैं)। इस तरह बीते माहों में राज्य की कई वनपंचायतों द्वारा माइक्रोप्लान बनाने के कार्य में सहयोग करने के बाद अब हमारी टीम अपने कार्यक्षेत्र में अनेक कार्यों में व्यस्त है।

वर्षाकाल चल रहा है। उत्तराखण्ड में बरसात की वजह से कइ रास्त बन्द हैं, राज्य बनने के 22 साल बाद भी जरुरत की जगहों पर भी पुल नहीं बन सके हैं। जगह-जगह ऊफनाये नालों पर वाहनों के बहने की खबरें आ रही हैं। स्वास्थ सुविधायें लाचारी की हालत में हैं, उस पर यह वर्षाकाल। कहीं गर्भवती महिलायें प्रसवपीड़ा के साथ इन ऊफनाये नालों के कम होने के इन्तजार में रहती हैं तो कहीं रास्ते बन्द होने के कारण ग्रामीण गर्भवती महिलाओं को खटिया में रखकर कई-कई किलोमीटर पैदल चलकर अस्पताल तक ला रहे हैं। उत्तराखण्ड के पहाड़ों में मानव-वन्य जीव संघर्ष लगातार बढ़ता जा रहा है। जिसकी कीमत ग्रामीणों को अपनी जान देकर चुकानी पड़ रही है। सत्ता अपने नशे में है, अखबारों में सत्ता की तारीफ में छप रहे इश्तेहार तो यही बता रहे हैं।

साथियो, श्रमयोग पत्र के माध्यम से सामुदायिक पत्रकारिता आन्दोलन को मजबूत करने की जिम्मेदारी हम सबके ऊपर है। हम श्रमयोग पत्र का संचालन सिर्फ पाठकों द्वारा अदा किये जाने वाले सदस्यता शुल्क से करते हैं व गैर-लाभकारी समाचार पत्र हैं। पत्र की वार्षिक सदस्यता ₹ 100 (डाकखर्च सहित) व आजीवन सदस्यता ₹ 1000 है। आपके द्वारा ग्रहण की गयी पत्र की सदस्यता सामुदायिक पत्रकारिता के उत्थान की इस मुहिम को मजबूत करेगी। बीते वर्षों में आपसे मिले हर तरह के सहयोग के लिये आभार।

जिन्दाबाद!

भीतर के पृष्ठों में

- गांव घर की खबर – पृष्ठ 2
- ढाई आखर – पृष्ठ 3
- कहानी 'पक्षी और दीमक' – पृष्ठ 4
- शुद्ध और साफ जल का मतलब – पृष्ठ 5
- सद्भावना यात्रावृतान्त – पृष्ठ 7
- मानव सभ्यताओं का ज्ञान-विज्ञान-7 – पृष्ठ 8

मौसम का हाल

दक्षिण-पश्चिम मानसून सक्रीय है। मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार देश भर में 01 जून से 01 अगस्त तक 487.5 मीमी वर्षा रिकॉर्ड की गई। इस दौरान उत्तराखण्ड में 540.5 मीमी वर्षा रिकॉर्ड की गई। अगस्त माह में पर्याप्त वर्षा होने की सम्भावना है।

अगस्त माह-सावधानियाँ

वर्षा ऋतु में जल स्रोतों में आ रहे जल की भौतिक अवस्था (रंग, गंध इत्यादि) बदलने पर जल को उबालकर व कपड़े से छानकर पियें। पर्याप्त मात्रा में पानी पियें। बाहर से घर वापस लौटने पर साबुन से हाथों को धोयें। अपने आस-पास मच्छरों को न पनपने दें।

अगस्त माह में विशेष दिवस

06 अगस्त	–	हिरोशिमा दिवस
09 अगस्त	–	नागासाकी दिवस
09 अगस्त	–	अगस्तक्रान्ति दिवस
15 अगस्त	–	स्वतन्त्रता दिवस
29 अगस्त	–	राष्ट्रीय खेल दिवस
30 अगस्त	–	टीमश्रमयोग बैठक दिवस
31 अगस्त	–	श्रम सखी बैठक दिवस

सम्पादकीय

आखिर हम समझते क्यों नहीं

भारत को हम विभिन्नता में एकता का देष कहते है। हमारे भारत में अनेक धर्म, जाति, सम्प्रदाय को मानने वाले लोग रहते हैं। उनके त्यौहार, रीति-रिवाज व मान्यताएं अलग-अलग हैं। इतनी विभिन्नता होने के बाद भी हम सभी पीढ़ियों से एक दूसरे का साथ देते हुए रह रहे हैं और आम तौर पर सभी के त्यौहारों, रीति-रिवाजों व मान्यताओं का सभी मिलकर सम्मान करते हैं। प्रकृति में भी या बाग में जब अनेक रंगों के फूल व फल की प्रजातियाँ हो, तब सब रंग देखने में कितने खूबसूरत लगते है। वहीं अगर प्रकृति में या बाग में एक ही तरह के फूल हों तो क्या उतना अच्छा लगता है। जब प्रकृति भी एक रंग की नहीं है तो हम लोगों के बीच कुछ लोग क्यों पूरे भारत में एक रंग चाहते हैं। आजकल क्यों हम इस सबमें उलझे हैं?

जाति-धर्म के जाल के कारण देश में बहुत से लोग अपने मुलभूत मुद्दों जैसे षिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, रोजगार को छोड़कर ऐसे मुद्दों के पीछे भटक रहे हैं, जिससे दु:ख और अषान्ति के सिवा इस समाज को कुछ मिलने वाला नहीं है। आज लोग धर्म को लेकर लड़ रहे हैं। कल्पना कीजिये जब पूरे देष में एक धर्म हो जाएगा तो क्या सब ठीक हो जाएगा। कभी भी नहीं। क्योंकि उसके बाद हम लोग धर्म के अन्दर जाति को लेकर लड़ेगे और यह लड़ाई हमेषा ऐसे ही आगे बढ़ती जायेगी। इस अन्तहीन लड़ाई से किसी को कुछ हासिल होने वाला नहीं है। एक ही विचार है जो हम सबको आगे लेकर चल सकता है वह है अहिंसा, प्रेम, बन्धुत्व व एकता का विचार। अहिंसा, प्रेम, बन्धुत्व व एकता के मार्ग पर चलकर ही बेहतर व रहने लायक समाज बनेगा।

हाँ कुछ राजनैतिक दल जरुर जाति-धर्म के जाल का फायदा लेते हैं। उनको ही आपने कहते सुना होगा- इस जाति के वोट या उस जाति के वोट, इस धर्म के वोट या उस धर्म के वोट। वास्तविकता यह है कि हर जाति-धर्म में बड़ी संख्या हम गरीबों की है। हमें जाति-धर्म की लड़ाई नहीं रोजगार चाहिये, जल-जंगल-जमीन पर हक चाहिये। गुणवत्ता वाली स्वास्थ सुविधाएं व शिक्षा चाहिये। यातायात की सुविधा चाहिये। पीने के लिये साफपानी चाहिये।

आपने धार्मिक या जातीय हिंसा में कभी किसी नेता या पूंजीपति के परिवार को शिकार होते देखा? उस हिंसा का शिकार भी हम गरीबों के परिवार होते हैं। क्या जाति-धर्म को बचाने का ठेका भी हम गरीबों का ही है। आम गरीब जनता को बांटने व समाज में नफरत फैलाने का सिलसिला बन्द होना चाहिये। अब हमको जाति-धर्म के जाल से बाहर आकर मुलभूत मुद्दों पर बात करनी होगी व इसके लिए मिलकर संघर्ष भी करना होगा।

(मेहमान सम्पादिका-आसना)

पाठकों के लिए

श्रमयोग पत्र में अपने प्रिय पाठकों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये **'गांव घर की खबर'** नाम से स्तम्भ प्रकाशित किया जाता है। आप समाज, देश, गांव, खेती, राजनीति, मानव मूल्य आदि किसी भी विषय पर अपनी बेबाक राय हमें भेजें। हमें इसे प्रकाशित करने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे। विचार कभी भी दबाए नहीं जाने चाहिये, इन्हें शब्द रूप दें।

-सम्पादक

श्रमयोग समुदाय की सदस्यता ग्रहण करें।

साथियों श्रमयोग आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही गतिविधियों का संचालन करता है। हम किसी भी सरकारी या गैर सरकारी संस्थान से किसी तरह की आर्थिक मदद प्राप्त नही करते है। अत: अपने अन्य साथियों को भी श्रमयोग समुदाय की सदस्यता लेने हेतु प्रेरित करें। सदस्यता शुल्क रू0 200/- वार्षिक है। प्रत्येक सदस्य तक ''श्रमयोग पत्र'' डाक द्वारा निशुल्क भेजा जायेगा। सदस्यता आवेदन पत्र के लिये आप shramyogcommunity@gmail.com पर पत्र भेज सकते है। श्रमयोग की गतिविधियों को जानने के लिये www.shramyog.org को देखें।

गांव घर की खबर

बरसात में हमारे बच्चों के लिए बहुत दिक्कतें हैं

धनेश्वरी देवी
अध्यक्षा, रचनात्मक महिला मंच, नैनीडांडा

आप सभी को मेरा नमस्कार। मैं धनेश्वरी देवी, रचनात्मक महिला मंच, नैनीडांडा की अध्यक्षा हूँ। आजकल हमारी समूह की सदस्याएं अपने खेतों मे काम कर रहीं हैं। आजकल बरसात का समय है, इस वक्त खेतों में बहुत सी घास उग जाती हैं, जिसे आजकल हम सभी लोग काट रहे हैं। बरसात आते ही हमारा पहला काम यही होता है, खेतों से झाड़ी काटना, यहां झाड़ी बहुत ज्यादा हैं। खेतों की साफ सफाई करके फिर गहत, मास, भट्ट, रियाँस आदि फसलें बोई जाएगीं।

आजकल हमारे यहाँ 60 साल से ऊपर के लोगों को कोविड टीकाकरण हो रहा है। वैसे तो बहुत से लोगों ने पहले ही टीका लगा लिया था, परन्तु जो लोग रह गये हैं उन्हें टीका लगना है। मैंने इसकी सूचना गाँव में दी। लोगों ने कहा कि हमें टीका नहीं लगवाना है। मैनें उन्हें समझाया कि यह शरीर के अन्दर रोगों से लड़ने वाली प्रक्रिया को बढाता हैं एवं शरीर का गंभीर संक्रमण से बचाव करता हैं।

आजकल बरसात के समय हमारे बच्चों के लिए बहुत दिक्कतें हो जाती हैं। बच्चों को स्कूल जाने के लिए पानी के दो रोलों को पार करना होता है। बरसात के समय रोलों में पानी बहुत बढ़ जाता हैं और पार करना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में हमें बच्चों को छोड़ने स्कूल जाना पड़ता हैं। हमारी समूह की सदस्यांए भी उस रास्ते के बारे में बात कर रहीं हैं, इस समस्या का समाधान करना जरूरी है। अंत में एक बात और कहना चाहती हूँ कि जो हमारा महिला महोत्सव होता हैं उसमें बच्चों के कार्यक्रम नहीं होने चाहिए, ऐसा में इसलिए कह रही हूँ क्योंकि मैंने ये अनुभव किया कि महोत्सव में कई समूह की सदस्यायें कार्यक्रम करने से छूट जाती हैं और उनका तैयार किया हुआ कार्यक्रम कोई नहीं देख पाता, जिससे उनका मनोबल टूटता है। बाद में ऐसे कार्यक्रम करने का मौका उन्हें कहीं नहीं मिलता। हर जगह बच्चों के बालमंच बने हैं हम लोग एक दिन अलग से बाल महोत्सव का दिन निकाल सकते हैं ताकि बच्चों को भी एक अच्छा मौका मिले, जिसमें ज्यादा बच्चे प्रतिभाग कर पाएं। ऐसा मेरा सुझाव है, सभी बहनों की सहमति से इस कार्य को करेंगें।

मेरा आप सभी बहनों को यह भी कहना है कि श्रमयोग पत्र में सब लिखें, उसमें अपनी बातें आप सभी को बतायें। इस पत्र की वजह से हम फिर से पढ़ना व लिखना सीख रहे हैं। इस पत्र के कारण ही मैं आप लोगों के सामने अपने विचार रख पा रही हूँ।

धन्यवाद।

आखिर घस्यारी महिलाओं पर अत्याचार क्यों ?

निर्मला देवी
अध्यक्षा, रचनात्मक महिला मंच, सल्ट

साथियो नमस्कार!

आशा करती हूँ आप अपने घर परिवार के साथ कुशल होंगे। सभी को पता है कि उत्तराखण्ड के चमोली जिले के हेलंग क्षेत्र में अपने पशुओं के लिये घास काट के ला रही महिलाओं का अपमान करते हुऐ पुलिस ने उनसे घास छीना। क्या उन महिलाओं को अपने हक का घास काटने का भी अधिकार नहीं है। आखिर घस्यारी महिलाओं पर यह अत्याचार क्यों? हम उनको अपना समर्थन देते हैं। वो अपने को अकेला न समझें हम सब उनके साथ हैं। साथियो, बरसात का मौसम है, झाड़ियां ज्यादा हो रही हैं। बाघ ने आंतक मचा रखा है। चार महिने के अन्दर तीन लोगो की जान चली गई है। बाघ कई गाय, बैलों को भी मार चुका है। सभी साथियों से निवेदन हैं कि अपना और अपने बच्चों का विशेष ध्यान दें। कई लोगों का घर जंगल के आस-पास है। बड़े हों या छोटे बच्चे हों सभी का ध्यान फोनों में रहता है। जब से कोरोना हुआ और ऑनलाईन पढाई हुई, सरकार ने बच्चों को टेबलेट दिया, तब से बच्चों का ध्यान कुछ ज्यादा ही फोनो में हो गया है, पढाई करते नहीं हैं, गेम खेलते रहते हैं, रास्ते में भी फोन हाथ में ही रहता हैं। बाघ कहाँ छिप कर बैठा है, कुछ पता नहीं चलता। सभी बच्चे रास्तों में चलते समय फोन/टैबलेट जैब या बस्ते में रखें। प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान के तहत जून माह में बच्चों का ग्रीष्मकालीन शिविर किया गया था। जिसमें बच्चों को 'अपने आस-पास को जानो' के बारे में बताया गया। मैं बाहर होने की वजह से शिविर में आ नहीं पाई। बच्चो, हमें अपनी प्राकृतिक सम्पदा को बचाना हैं। प्रकृति ने हमें वायु, जल, अग्नि, भूमि, आकाश दिये हैं, जिन्हे हम पंच महाभूत भी कहते हैं। मानव जीवन को सुरक्षित रखने के लिए इनका संरक्षण जरुरी हैं। वनस्पति हमें वायु प्रदान करने के आलावा फल, फूल, औषधि प्रदान करती है। जल ही जीवन है, जल के बिना मानव जीवित रहने की कल्पना भी नही कर सकता। अग्नि हमें शीत से दूर करती है और भोजन को पकाने के साथ-साथ शरीर में ऊर्जा का संचालन करती है। अत: प्राकृतिक धरोहर को बचाने के लिए हमें पंच महाभूतों का उपयोगिता के साथ प्रयोग करना जरुरी है।

इस बार भंगजीर का कोई-कोई बीज जमा है

शान्ति देवी
भूमि स्वयं सहयता समूह, देवचूली

साथियो नमस्कार!

मैं शान्ति देवी। मेरे गाँव का नाम देवचुली हैं। मैं भूमि स्वयं सहायता समूह की सचिव हूँ। हमारे गाँव में तीन चार दिन से बारिस नहीं हो रही हैं। इस बार और सालों के मुकाबले ज्यादा गर्मी हैं। आजकल खेती मैं मिर्च, अदरक, हल्दी, लोभिया की नलाई-गुड़ाई हो रही है।

भंगजीर दो बार बोया पहली बार नहीं जमा। दूसरी बार बोया तो कोई-कोई बीज जम रहे हैं। पहली बार सही समय पर वर्षा नहीं हुई इसीलिए नहीं जमा। हमारे गाँव में सड़क तो आई लेकिन पहली वर्षा में ही सारी सडक टूट चुकी है, जिससे हम लोगों को बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है।

मैं चाहती हूँ कि श्रमयोग हमारी मदद करे कि हम किस से बात करें या किसे पत्र लिखें।

हमारे गाँव में बाघ का खतरा

अर्चना बुदोडी
नव-ज्योति स्वयं सहायता समूह, बल्यूली

हमारा गाँव बल्यूली कार्बेट नेशनल पार्क के अन्तर्गत आता है। आजकल हमारे गाँव में बाघ से हमें बहुत खतरा है। हम इस दौरान अपने गाँव के आस-पास तीन बाघ देख चुके हैं। हमें अपने पशुओं को भी छोड़ने (चरने के लिये) में भी डर लग रहा है। बाघ पशुओं पर भी हमला कर रहा है। हम सब जब गाय चराने गये थे तब एक गाय पर उसने हमला कर दिया था। हमारे शौर मचाने से वह भाग गया। वन विभाग वालों से कुछ कहें तो उनका कहना है कि हमें ऊपर से कोई आदेश नहीं आया है अत: हम कुछ नहीं कर सकते। हमें अब बाजार जाने में भी डर लग रहा है। हम कब तक ऐसे डरे सहमें रहेंगे। आजकल तो हर समाचार पत्र में बाघ के आतंक की खबरें रोज आ रही हैं। इससे मन में और भय उत्पन्न हो रहा है। हम वन विभाग से गुजारिश करते हैं कि इन बाघो का कुछ इन्तजाम किया जाए ताकि हर नागरिक भयमुक्त हो सके।

बरसात में हमारे गांव में रामगंगा नदी के आ जाने से भी हमें बहुत दिक्कतो का सामना करना पड़ रहा है। हमारे गॉव से स्कूल दूर है और नदी के आ जाने से बच्चे स्कूल नहीं जा पाते। हमारे यहाँ झूलापुल तो है मगर बरसात में पुल के पार पानी आ जाता है। हमें दो महीने का राशन एक साथ रखना पड़ता है। नदी आ जाने से हम उस पार नही जा पाते हैं। अब हमें क्या करना चाहिए कुछ उपाय है तो बताना। मैं श्रमयोग पत्र में अपने विचार लिख रही हूँ ताकि हमें कुछ अच्छी सलाह मिले।

फरवरी से बाघ का आंतक

अनीता देवी
सखी स्वयं सहायता समूह, झडगाँव

साथियो नमस्कार!

मैं अनीता देवी, ग्राम झड़गाँव सखी स्वयं सहायता समूह से हूँ। श्रमयोग परिवार, एवं अपने मंच के साथियों को मैं अवगत कराना चाहती हूँ कि हमारे गाँव में फरवरी से अभी तक बाघ का आंतक मचा हुआ है। शुरु के एक महीने तक तो वन विभाग वालों ने ध्यान दिया, पिंजरा भी लगाया। लेकिन अब कोई ध्यान नहीं दे रहा। कूपी, सारूड़, झड़गाँव, नागतले, बन्द्राण, जमरिया, साकर, बल्यूली आदि जगहों से रा0 इ0 कॉलेज झडगाँव में बच्चे पढ़ने के लिए आते हैं। जब तक सभी बच्चे अपने-अपने घरों में नहीं पहुँच जाते तब तक माता-पिता को डर बना रहता है कि नमालूम क्या सूचना मिले। लोग डरे डरे से रहते हैं। लेकिन शासन-प्रशासन व जनप्रतिनिधि चुपचाप बैठे हुए हैं।

कल 24 जुलाई की शाम को बाघ ने सुरेन्द्र चन्द्र की दूध देने वाली गाय को मार दिया। शान्ति देवी गाय को अन्दर बांधने के लिए ला रही थी, गाय की नजर बाघ पर पड़ी और वह भाग गई। जब तक शान्ति देवी घर से टॉर्च लाती, बाघ ने उनकी गाय को अपना निवाला बना दिया। लोग बाघ के डर से बच्चों को स्कूल भेजने से मना कर रहे हैं। बच्चों की पढ़ाई पहले कोरोना के डर से नहीं हो पाई और अब बाघ की वजह से। मैं मंच से अनुरोध करूंगी कि हमारी परेशानी को मुख्यमंत्री तक पहुँचाने का कष्ट करें।

ढाई आखर.....

घास, पशुधन और हमारी अस्मिता

बिजू नेगी

मैं सोच रहा था कि इस बार भी खेती-किसानी की ही बात जारी रखी जाए। लेकिन हमारे सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक माहौल में हर महीने, बल्कि हर हफ्ते या कभी-कभी तो हर दिन ही कोई ऐसी नई घटना हो जाती है जो हमें परेशान करती है और हमें सोचने और सवाल करने के लिए मजबूर करती है।

कई बार होता है कि जब घटनाएं बहुत तेजी से, एक के बाद एक होती है तो अक्सर ऐसा होता है हम उससे पिछली घटनाओं को भूल जाते हैं या उन पर हमारा ध्यान नही टिकता या वे हमारी स्मृति में पीछे चली जाती है और हम उन पर रुक उतना विचार या चर्चा नही करते (या कर पाते) हैं जितना कि करना चाहिए और समस्या जस की तस बनी रहती है। मगर तेजी से ये घटनाएं घटित हो रही हैं तो कभी-कभी यह भी शक होने लगता है कि क्या इसीलिए तो नही हो रही या कराई जा रही हैं कि लोग उन पर ठोस चर्चा न कर सकें और किसी अंतिम निर्णय न पहुंच सकें।

फिर भी, दो-तीन हफ्ते पहले ऐसी ही एक घटना हुई जो पहाड़ के व्यापक जन-मानस में घर कर गयी-और जिसे घर करना भी चाहिए था-क्योंकि वह हमारी मूल संवेदनाओं, पहाड़ी समाज के प्राथमिक आधार और पहाड़ की महिलाओं की अस्मिता पर हमला करती है।

मैं हेलंग (चमोली) की बात कर रहा हूं। उस घटना के बारे में आप सब जानते ही होंगे। वह पूरा घटना क्रम क्या था और उसके पात्र कौन-कौन थे? घास का बोझा ला रही मंदोदरी देवी व लीलावती, साथ में एक छोटी बच्ची, सी.आई.एस.एफ. व महिला पुलिस, कंपनी के कर्मचारी, एक तेज ढाल वाली जमीन, एक अविश्वनीय डंपिग ग्राऊण्ड, सुरक्षा बल व महिला पुलिस द्वारा घास को लेकर औरतों से छीना-झपटी, औरतों द्वारा अपने घास का लेकर बचाव की कोशिश, विनती भी करना और रुआंसा भी होना, औरतों व उनके साथ छोटी बच्ची को पुलिस चौकी पर ले जाना और फिर औरतों का रु 1000 का चलान काटना और उनको थाने में करीब छ: घण्टे हिरासत में रखना।

आप इस घटना को किस तरह देखते हैं? आपकी नजर व समझ में इस पूरी घटना के क्या मायने हैं? खेती-किसानी हमारे समाज का प्रमुख आधार है। पशु उस खेती-किसानी की उत्तर जीविता की धुरी है; वह खेती के फसल-चक्र ही नही बल्कि हमारे जीवन-चक्र ही का एक अहम हिस्सा और हमारी संस्कृति में पूरी तरह रचा बसा है। घसियारी पहाड़ की प्रथम नागरिक है। यह आप को बताने की जरूरत नही है। आप ही के जीवन का ये हिस्सा है। सुरक्षा बल व पुलिस की कार्यवाही हमारे समाज, जीवन व खेती के आधार के खिलाफ ही एक साजिश है, जो भविष्य के लिए सतर्क कर सकती है।

और क्या मायने हैं उस घटना के? क्या ये सिर्फ घास का मामला है या इसके अन्य निहितार्थ हैं? हमारे प्रदेश में खूब जल-विद्युत योजनाएं चलाई जा रही हैं। हमें घोट-घोट कर बताया जाता है कि यही विकास है और हम भी ऐसा ही मान बैठते हैं। लेकिन शुरू में स्थानीय लोगों को खूब सब्ज-बाग दिखा कर, इन योजनाओं से जुड़ी कंपनियां अपने असली रंग में उतर आती है और खुद को मालिक ही मानने लगती हैं। अपने धन के बल पर व लोगों में फूट डालकर, वे नियम कानूनों को ताक पर रख, कानून को धत्ता बताकर या उसकी आड़ में अपनी मनमानी करने लगती हैं और स्थानीय या प्रदेश का प्रशासन और आपके अपने चुने हुए प्रतिनिधि उनके सामने लाचार नजर आते हैं, इच्छा या अनिच्छा से।

तो अब आप इसको कैसे देखोगे? आपकी अपनी प्रतिक्रिया क्या होगी? क्या आप इस पर चर्चा करोगे और कुछ निर्णय लोगे? ये पहाड़ की औरतों की अस्मिता का सवाल है? लेकिन ये सिर्फ औरतों का ही सवाल नही है?

क्या हम इस मसले को आगे बढ़ा सकते हैं? गांव स्तर से ग्राम सभा स्तर तक, फिर ब्लॉक, फिर जिला फिर प्रदेश स्तर तक?

जन मैत्री का बीज बम अभियान

बच्ची सिंह बिष्ट, जन मैत्री संगठन

जन मैत्री विगत 12 वर्षों के अनुभव से यह समझ सके कि पर्वतीय उत्तराखंड के जंगलों में लगातार आग, अत्यधिक मानवीय हस्तक्षेप, सरकारों की असंवेदनशील नीतियों और जंगलों के प्रति आम जन मानस की घटते लगाव के कारण जंगलों में वन्य प्राणियों के अधिवास, भोजन की व्यवस्था, निजता और पेयजल की बहुत कमी हो चुकी है। एक बड़ा कारण अवैध शिकार भी है। क्योंकि सघन वनों में शिकारी टेंट लगाकर कई-कई दिनों तक वन्य प्राणियों का शिकार करते हैं और उनके पानी और भोजन के स्थानों को बाधित करते हैं। भोजन और पानी के साथ ही असुरक्षा की भावना से वन्यजीव मानव बस्तियों की ओर लगातार आते हैं और अपने भोजन की तलाश में फसलों को नुकसान भी पहुंचाते हैं।

वन्य जीव-मानव संघर्ष उत्तराखंड की एक जमीनी वास्तविकता बन चुकी है। जिसे रोकने के लिए हमारे और अनेक संगठनों ने जंगलों में जल संचय, फलदार पौधों का, कटिंग का रोपण भी किया है और करते रहते हैं। साथ ही जंगलों के अंदर मौजूद जल श्रोतों में सुधार, नव निर्माण भी करते हैं। यह सीमित मात्रा में ही होता है। हरेक साल जंगलों की आग लाखों वन्य प्राणियों, वृक्ष वनस्पतियों और जल श्रोतों को नष्ट कर देती है। जिससे वन्य प्राणियों, चौड़ी पत्ती के जंगलों, घासों, जड़ी बूटियों और वन्य प्राणियों के भोजन वाली वनस्पतियों को अत्यधिक नुकसान पहुंचता है। बड़ी मात्रा में जंगलों में पौधारोपण बजट और देखरेख की समस्या से कामयाब नहीं हो रहे हैं। जंगल पौधारोपण से नहीं बनते हैं। मानव की आवाजाही घटाने जंगलों की आग को रोकने से जंगल अपने आप को पुनर्जीवित और समृद्ध बना लेते हैं।

इस दिशा में उन खाली स्थानों और नदी किनारे, पनीले स्थानों और चट्टानी जगहों पर मौसम के अनुकूल बीजों को सावधानी से छोड़ना उपयोगी होता है। बीज ठीक से जम सकें इसके लिए उनको मिट्टी और गोबर के गोले बनाकर थोड़ा सुखा लिया जाता है ताकि बरसात मिलने से गोबर और मिट्टी गीली होकर बीज के अंकुरण में सहायक बने और खाली स्थान पर नया पौधा उग आए। इस बीज भरे गोले को बीज बम नाम दिया गया है।

जनमैत्री और कार्ड संस्था ने इस वर्ष बीज बम सप्ताह में भागीदारी की। जिसके लिए पाटा क्षेत्र के किसान, बागवान महेश नयाल ने बीज बम बनाए और इस अभियान के लिए उपलब्ध करवाए। जिनमें बरसाती मौसम में जमने वाले बीज जैसे पदम, मेहल, किमू, अखरोट, चुआरू या चूलू, ककड़ी, कद्दू, व दालों के बीज शामिल किए गए। हमारा उद्देश्य बीज बम की जानकारी के साथ जंगलों की जैव विविधता बनाए रखने की जानकारी देना, लोगों को वन्य प्राणियों के साथ संघर्ष के स्थान पर समन्वय के उपाय अपनाने की जानकारी देना और जंगलों में मौजूद पानी के स्थानों को बचाने के लिए जागरूक करना था।

इस अभियान में हमने देव टांडा के निर्बल परिवारों की महिलाओं के साथ बैठक की और उनको बीज बम डालने की विधि बताई। साथ ही वन्य प्राणियों को क्या चाहिए और उसके लिए ग्राम संगठन कैसे कार्य कर सकते हैं उसके बारे में भी जागरूक किया। जिसके निष्कर्ष में महिलाओं ने निर्णय लिया कि देव टांडा महिला संगठन की महिलाएं स्थानीय बीजों को एकत्र करेंगी और मौसम में उगने वाले बीजों के गोले या बम बनाकर उन स्थानों पर डालेंगे जो वन्य प्राणियों के लिए अनुकूल होंगे। इस बैठक में अन्य पड़ोसी गांव अलमोडी से मोहन राम जी, कमलेश लोधियाल और प्रेम राम भी शामिल रहे। इस अभियान की चर्चा रात्रि में जन मैत्री केंद्र गल्ला में महेश गलिया और गांव के महिला पुरुषों से, वरिष्ठ लोगों के साथ व्यक्तिगत मिलकर की गई। सभी ने एक बात कही कि जब बारिश ही नहीं हो रही तो बीज बम कैसे परिणाम देंगे। जल संचय के महत्व के साथ ही आने वाले समय में जल संकट के बढ़ने की चिंताएं साझा की गई और उससे निपटने के सरल उपायों पर भी संभावनाओं की तलाश की गई।

दूसरे दिन स्वतंत्रता सेनानी किशन सिंह मेहता राजकीय इंटर कॉलेज सूपी में छात्र छात्राओं के साथ सघन सत्र किया गया। जिसमें परिवेश में मौजूदा प्रकृति तंत्र के संकट और उसे बचाने के उपायों पर विशेष रूप से बात की गई। बच्चों ने बीज बम को लेकर उत्साह दिखाया। स्कूल के शिक्षकों ने इसे बहुत सराहनीय प्रयास बताकर टीम का उत्साह वर्धन किया। अभियान का अगला चरण वन पंचायत सूपी काफलि में किया गया। जहां नव निर्वाचित सरपंच वन पंचायत की ओर से नौजवानों ने जंगल में खाली स्थानों पर बीज बम फेंके और बीज बमों, पौधारोपण, नदी संरक्षण, जल संचय की जानकारी ली। इस दौरान लगातार सूखे जैसी स्थिति को देखते हुए वन पंचायत को पौधारोपण के दौरान पौधों की देखरेख करने पर जानकारी दी गई। वन पंचायत ने खाली स्थानों पर वन्य पौधों के रोपण के कार्य को करने का संकल्प व्यक्त किया।

एक और सत्र नगारी गांव भवाली में महिला समूहों के साथ साझा गोष्ठी में किया गया। जिसमें शिप्रा नदी को बचाने में जुटे जगदीश नेगी और महिला समूहों की सदस्य महिलाएं जुड़ी। जैव विविधता के खत्म होने, अति निर्माण, वन्य प्राणी मानव संघर्ष, नदियों के मरने, प्लास्टिक कचरे का उचित प्रबंधन और महिलाओं की आजीविका बढ़ाने जैसे विषयों पर बातचीत के बाद, महिलाओं ने बीज बमों के निर्माण और महत्व पर भी जानकारी प्राप्त की।

भविष्य की दृष्टि से बीज बमों द्वारा प्राकृतिक तरीके से पौधे लगाने और जंगलों में वन्य प्राणियों के लिए भोजन, पेयजल और रहवास की व्यवस्था को बिना बाधा पहुंचाए ही पौधे उगाने की बात पर सबकी रुचि से भविष्य में भी बेहतर प्रयासों को करने की संभावना को बल मिला। इस अभियान के दौरान कार्ड संस्था के संस्थापक सुभाष पंगरिया, जनमैत्री के संस्थापक बची सिंह बिष्ट, जनमैत्री के ही महेश गलिया, बसंत लाल, महेश नयाल, योगेश सिंह, महेश चंद्र आदि साथी लगातार शामिल रहे।

हिन्दी साहित्य जगत में गजानन माधव मुक्तिबोध किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। सामान्यतया मुक्तिबोध की चर्चा लोग कवि के रुप में करते हैं पर तथ्य यह है कि उन्होंने गद्य भी विपुल मात्रा में लिखा है। यहाँ किश्तों में छापी जा रही उनकी लिखी कहानी 'पक्षी और दीमक' की अन्तिम किश्त प्रस्तुत की जा रही है।

पक्षी और दीमक

....कि इतने में मैं दो कदम एक ओर हट जाता हूँ और पाता हूँ कि मोटर के उस काले चमकदार आईने में मेरे गाल, ठुड्डी, नाम, कान सब चौड़े हो गए हैं, एकदम चौड़े। लंबाई लगभग नदारद। मैं देखता ही रहता हूँ, देखता ही रहता हूँ कि इतने में दिल के किसी कोने में कई अँधियारी गटर एकदम फूट निकलती है। वह गटर है आत्मालोचन, दुख और ग्लानि की।

और, सहसा मुँह से हाय निकल पड़ती है। उस भगवे खद्दर-कुरते वाले से मेरा छुटकारा कब होगा, कब होगा।

और, तब लगता है कि इस सारे जाल में, बुराई की इस अनेक चक्रों वाली दैत्याकार मशीन में, न जाने कब से मैं फँसा पड़ा हूँ। पैर भिंच गए हैं, पसलियाँ चूर हो गई हैं, चीख निकल नहीं पाती, आवाज हलक में फँसकर रह गई है।

कि इसी बीच अचानक एक नजारा दिखाई देता है। रोमन स्तंभों वाली विश्वविद्यालय के पुस्तकालय की ऊँची, लंबी, मोतिया सीढ़ियों पर से उतर रही है एक आत्म-विश्वासपूर्ण गौरवमय नारी मूर्ति। वह किरणीली मुस्कान मेरी ओर फेंकती-सी दिखाई देती है। मैं इस स्थिति में नहीं हूँ कि उसका स्वागत कर सकूँ। मैं बदहवास हो उठता हूँ। वह धीमे-धीमे मेरे पास आती है। अभ्यर्थनापूर्ण मुस्काराहट के साथ कहती है, 'पढ़ी है आपने यह पुस्तक।' काली जिल्द पर सुनहले रोमन अक्षरों में लिखा है, 'आई विल नाट रेस्ट।' मैं साफझूठ बोल जाता हूँ, 'हाँ पढ़ी है, बहुत पहले।'

लेकिन मुझे महसूस होता है कि मेरे चेहरे पर से तेलिया पसीना निकल रहा है। मैं बार-बार अपना मुँह पोंछता हूँ रूमाल से। बालों के नीचे ललाट-हाँ, ललाट, (यह शब्द मुझे अच्छा लगता है) को रगड़ कर साफ करता हूँ।

और, फिर दूर एक पेड़ के नीचे, इधर आते हुए, भगवे खद्दर-कुरते वाले की आकृति को देख कर श्यामला से कहता हूँ, अच्छा, मैं जरा उधर जा रहा हूँ। फिर भेंट होगी।' और सभ्यता के तकाजे से मैं उसके लिए नमस्कार के रूप में मुस्कराने की चेष्टा करता हूँ।

पेड़!

अजीब पेड़ है, (यहाँ रूका जा सकता है), बहुत पुराना पेड़ है, जिसकी जड़ें उखड़ कर बीच में से टूट गई हैं और साबित हैं, उनके आस-पास की मिट्टी खिसक गई है। इसलिए वे उभरकर ऐंठी हुई-सी लगती हैं। पेड़ क्या है, लगभग ठूँठ है। उसकी शाखाएँ काट डाली गई हैं।

लेकिन, कटी हुई बाँहों वाले उस पेड़ में से नई डालें निकल कर हवा में खेल रही हैं! उन डालों में कोमल-कोमल हरी-हरी पत्तियाँ झालर-सी दिखाई देती हैं। पेड़ के मोटे तने में से जगह-जगह ताजा गोंद निकल रहा है। गोंद की साँवली कत्थई गठानें मजे में देखी जा सकती हैं।

अजीब पेड़ है, अजीब! (शायद, यह अच्छाई का पेड़ है) इसलिए कि एक दिन शाम की मोतिया-गुलाबी आभा में मैंने एक युवक-युवती को इस पेड़ के तले ऊँची उठी हुई, उभरी हुई, जड़ पर आराम से बैठे हुए पाया था। संभवत: वे अपने अत्यंत आत्मीय क्षणों में डूबे हुए थे।

मुझे देख कर युवक ने आदर पूर्वक नमस्कार किया। लड़की ने भी मुझे देखा और झेंप गई। हलके झटके से उसने अपना मुँह दूसरी ओर कर लिया। लेकिन उसकी झेंपती हुई ललाई मेरी नजरों से न बच सकी। इस प्रेम-मुग्ध युग्म को देख कर मैं भी एक विचित्र आनंद में डूब गया। उन्हें निरापद करने के लिए जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाता हुआ मैं वहाँ से नौ-दो ग्यारह हो गया।

यह पिछली गर्मियों की मनोहर साँझ की बात है। लेकिन आज इस भरी दोपहरी में श्यामला के साथ पल-भर उस पेड़ के तले बैठने को मेरी भी तबीयत हुई। बहुत ही छोटी और भोली इच्छा है यह। लेकिन मुझे लगा कि शायद श्यामला मेरे सुझाव को नहीं मानेगी। स्कूल-मैदान पहुँचने की उसे जल्दी जो है। कहने की मेरी हिम्मत ही नहीं हुई। लेकिन दूसरे क्षण, आप-ही-आप, मेरे पैर उस ओर बढ़ने लगे। और ठीक उसी जगह मैं भी जाकर बैठ गया, जहाँ एक साल पहले वह युग्म बैठा था। देखता क्या हूँ कि श्यामला भी आकर बैठ गई है।

तब वह कह रही थी, 'सचमुच बड़ी गरम दोपहर है।'

सामने मैदान-ही-मैदान हैं, भूरे मटमैले! उन पर शिरीष और शीशम के छायादार विराम-चिह्न खड़े हैं। मैं लुब्ध और मुग्ध होकर उनकी घनी-गहरी छायाएँ देखता रहता हूँ...

क्योंकि... क्योंकि मेरा यह पेड़, यह अच्छाई का पेड़ छाया प्रदान नहीं कर सकता, आश्रय प्रदान नहीं कर सकता, (क्योंकि वह जगह-जगह काटा गया है) वह तो कटी शाखाओं की दूरियों और अंतरालों में से केवल तीव्र और कष्टप्रद प्रकाश को ही मार्ग दे सकता है।

लेकिन मैदानों के इस चिलचिलाते अपार विस्तार में एक पेड़ के नीचे, अकेलेपन में, श्यामला के साथ रहने की यह जो मेरी स्थिति है, उसका अचानक मुझे गहरा बोध हुआ। लगा कि श्यामला मेरी है, और वह भी इसी भाँति चिलमिलाते गरम तत्वों से बनी हुई नारी-मूर्ति है। गरम बफ्ती हुई मिट्टी-सा चिलमिलाता हुआ उसमें अपनापन है।

तो क्या आज ही, अगली अनगिनत गरम दोपहरियों के पहले आज ही, अगले कदम उठाए जाने के पहले, इसी समय, हाँ, इसी समय, उसके सामने अपने दिन की गहरी छिपी हुई तहें और सतहें खोलकर रख दूँ... कि जिससे आगे चलकर उसे गलतफहमी में रखने, उसे धोखे में रखने का अपराधी न बनूँ।

कि इतने में मेरी आँखों के सामने, फिर उसी भगवे खद्दर-कुरते वाले की तस्वीर चमक उठी। मैं व्याकुल हो गया और उससे छुटकारा चाहने लगा।

तो फिर आत्म-स्वीकार कैसे करूँ, कहाँ से शुरू करूँ!

लेकिन क्या वह मेरी बातें समझ सकेगी? किसी तनी हुई रस्सी पर वजन साधते हुए चलने का, 'हाँ' और 'ना' के बीच में रहकर जिंदगी की उलझनों में फँसने का तजुर्बा उसे कहाँ है!

हटाओ, कौन कहे।

लेकिन यह स्त्री शिक्षिता तो है! बहस भी तो करती है! बहस की बातों का संबंध न उसके स्वार्थ से होता है, न मेरे। उस समय हम लड़ भी तो सकते हैं। और ऐसी लड़ाइयों में कोई स्वार्थ भी तो नहीं होता। सामने अपने दिल की सतहें खोल देने में न मुझे शर्म रही, न मेरे सामने उसे। लेकिन वैसा करने में तकलीफ तो होती ही है, अजीब और पेचीदा, घूमती-घुमाती तकलीफ!

और उस तकलीफको टालने के लिए हम झूठ भी तो बोल देते हैं, सरासर झूठ, सफेद झूठ! लेकिन झूठ से सच्चाई और गहरी हो जाती है, अधिक महत्वपूर्ण और अधिक प्राणवान, मानो वह हमारे लिए और सारी मनुष्यता के लिए विशेष सार रखती हो। ऐसी सतह पर हम भावुक हो जाते हैं। और, यह सतह अपने सारे निजीपन में बिलकुल बेनिजी है। साथ ही, मीठी भी! हाँ, उस स्तर की अपनी विचित्र पीड़ाएँ हैं, भयानक संताप है, और इस अत्यंत आत्मीय किंतु निर्वैयक्तिक स्तर पर हम एक हो जाते हैं, और कभी-कभी ठीक उसी स्तर पर बुरी तरह लड़ भी पड़ते हैं।

श्यामला ने कहा, 'उस मैदान को समतल करने में कितना खर्च आएगा?'

'बारह हजार।'

'उनका अंदाज क्या है?'

'बीस हजार ।'

'तो बैठक में जाकर समझा दोगे और यह बता दोगे कि कुल मिलाकर बारह हजार से ज्यादा नामुमकिन है?'

'हाँ, उतना मैं कर दूँगा।'

'उतना का क्या मतलब?'

अब मैं उसे 'उतना' का क्या मतलब बताऊँ! साफहै कि उस भगवे खद्दर-कुरते वाले से मैं दुश्मनी मोल नहीं लेना चाहता। मैं उसके प्रति वफादार रहूँगा क्योंकि मैं उसका आदमी हूँ। भले ही वह बुरा हो, भ्रष्टाचारी हो, किंतु उसी के कारण ही मैं विश्वास-योग्य माना गया हूँ। इसीलिए, मैं कई महत्वपूर्ण कमेटियों का सदस्य हूँ।

मैंने विरोध-भाव से श्यामला की तरफ देखा। वह मेरा रुख देख कर समझ गई। वह कुछ नहीं बोली। लेकिन मानो मैंने उसकी आवाज सुन ली हो।

श्यामला का चेहरा 'चार जनियों-जैसा' है। उस पर साँवली मोहक दीप्ति का आकर्षण है। किंतु उसकी आवाज... हाँ... आवाज... वह इतनी सुरीली और मीठी है कि उसे अनसुना करना निहायत मुश्किल है। उस स्वर को सुनकर दुनिया की अच्छी बातें ही याद आ सकती हैं।

पता नहीं किस तरह की परेशान पेचीदगी मेरे चेहरे पर झलक उठी कि जिसे देख कर उसने कहा, 'कहो, क्या कहना चाहते हो।'

यह वाक्य मेरे लिए निर्णायक बन गया। फिर भी अवरोध शेष था। अपने जीवन का सार-सत्य अपना गुप्त-धन है। उसके गुप्त संघर्ष हैं, उसका अपना एक गुप्त नाटक है। वह प्रकट करते नहीं बनता। फिर भी, शायद है कि उसे प्रकट कर देने ये उसका मूल्य बढ़ जाए, उसका कोई विशेष उपयोग हो सके।

एक था पक्षी। वह नीले आसमान में खूब ऊँचाई पर उड़ता जा रहा था। उसके साथ उसके पिता और मित्र भी थे।

(श्यामला मेरे चेहरे की तरफआश्चर्य से देखते लगी)

सब बहुत ऊँचाई पर उड़ने वाले पक्षी थे। उनकी निगाहें भी बड़ी तेज थीं। उन्हें दूर-दूर की भनक और दूर-दूर की महक भी मिल जाती।

एक दिन वह नौजवान पक्षी जमीन पर चलती हुई एक बैलगाड़ी को देख लेता है। उसमें बड़े-बड़े बोरे भरे हुए हैं। गाड़ी वाला चिल्ला-चिल्ला कर कहता है, 'दो दीमकें लो, एक पंख दो।'

उस नौजवान पक्षी को दीमकों का शौक था। वैसे तो ऊँचे उड़ने वाले पक्षियों को हवा में ही बहुत-से कीड़े तैरते हुए मिल जाते, जिन्हें खा कर वे अपनी भूख थोड़ी-बहुत शांत कर लेते।

लेकिन दीमकें सिर्फ जमीन पर मिलती थीं। कभी-कभी पेड़ों पर-जमीन से तने पर चढ़ कर, ऊँची डाल तक, वे अपना मटियाला लंबा घर बना लेतीं। लेकिन वैसे कुछ ही पेड़ होते, और वे सब एक जगह न मिलते।

नौजवान पक्षी को लगा- यह बहुत बड़ी सुविधा है कि एक आदमी दीमकों को बोरों में भरकर बेच रहा है।

वह अपनी ऊँचाइयाँ छोड़ कर मँडराता हुआ नीचे उतरता है और पेड़ की एक डाल पर बैठ जाता है।

दोनों का सौदा तय हो जाता है। अपनी चोंच से एक पर को खींचकर तोड़ने में उसे तकलीफभी होती है लेकिन उसे वह बरदाश्त कर लेता है। मुँह में बड़े स्वाद के साथ दो दीमकें दबाकर वह पक्षी फुर्र से उड़ जाता है।

(कहते-कहते मैं थक गया शायद साँस लेने के लिए। श्यामला ने पलकें झपकाईं और कहा, 'हूँ')

अब उस पक्षी को गाड़ी वाले से दीमकें खरीदने और एक पर देने में बड़ी आसानी मालूम हुई। वह रोज तीसरे पहर नीचे उतरता और गाड़ी वाले को एक पंख दे कर दो दीमकें खरीद लेता।

कुछ दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। एक दिन उसके पिता ने देख लिया। उसने समझाने को कोशिश की कि बेटे, दीमकें हमारा स्वाभाविक आहार नहीं हैं, और उसके लिए अपने पंख तो हरगिज नहीं दिए जा सकते।

लेकिन, उस नौजवान पक्षी ने बड़े ही गर्व से अपना मुँह दूसरी ओर कर लिया। उसे जमीन पर उतर कर दीमकें खाने की चट लग गई थी। अब उसे न तो दूसरे कीड़े अच्छे लगते, न फल, न अनाज के दाने। दीमकों का शौक अब उस पर हावी हो गया था।

(श्यामला अपनी फैली हुई आँखों से मुझे देख रही थी, उसकी ऊपर उठी हुई पलकें और भौंएँ बड़ी ही सुंदर दिखाई दे रही थीं।)

लेकिन ऐसा कितने दिनों तक चलता। उसके पंखों की संख्या लगातार घटती चली गई। अब वह, ऊँचाइयों पर, अपना संतुलन साध नहीं सकता था, न बहुत समय तक पंख उसे सहारा दे सकते थे। आकाश-यात्रा के दौरान उसे जल्दी-जल्दी पहाड़ी चट्टानों गुंबदों और बुर्जो पर हाँफते हुए बैठ जाना पड़ता। उसके परिवार वाले तथा मित्र ऊँचाइयों पर तैरते हुए आगे बढ़ जाते। वह बहुत पिछड़ जाता। फिर भी दीमक खाने का उसका शौक कम नहीं हुआ। दीमकों के लिए गाड़ी वाले को वह अपने पंख तोड़-तोड़ कर देता रहा।

(श्यामला गंभीर होकर सुन रही थी। अबकी बार उसने 'हूँ' भी नहीं कहा।)

फिर उसने सोचा कि आसमान में उड़ना ही फिजूल है। वह मूर्खों का काम है। उसकी हालत यह थी कि अब वह आसमान में उड़ ही नहीं सकता था, वह सिर्फ एक पेड़ से उड़ कर दूसरे पेड़ तक पहुँच पाता। धीरे-धीरे उसकी यह शक्ति भी कम होती गई। और एक समय वह आया जब वह बड़ी मुश्किल से, पेड़ की एक डाल से लगी हुई दूसरी डाल पर, चल कर, फुदक कर पहुँचता। लेकिन दीमक खाने का शौक नहीं छूटा।

बीच-बीच में गाड़ी वाला बुत्ता दे जाता। वह कहीं नजर में न आता। पक्षी उसके इंतजार में घुलता रहता।

लेकिन दीमकों का शौक जो उसे था। उसने सोचा, 'मैं खुद दीमकें ढूँढ़ूँगा। इसलिए वह पेड़ पर से उतर कर जमीन पर आ गया और घास के एक लहराते गुच्छे में सिमटकर बैठ गया।

(श्यामला मेरी ओर देखे जा रही थी। उसने अपेक्षा पूर्वक कहा 'हूँ।')

फिर एक दिन उस पक्षी के जी में न मालूम क्या आया। वह खूब मेहनत से जमीन में से दीमकें चुन-चुनकर, खाने के बजाय उन्हें इकट्ठा करने लगा। अब उसके पास दीमकों के ढेर के ढेर हो गए।

फिर एक दिन एकाएक वह गाड़ीवाला दिखाई दिया। पक्षी को बड़ी खुशी हुई। उसने पुकार कर कहा, 'गाड़ी वाले, ओ गाड़ी वाले! मैं कब से तुम्हारा इंतजार कर रहा था।'

पहचानी आवाज सुनकर गाड़ी वाला रुक गया। तब पक्षी ने कहा, 'देखो, मैंने कितनी सारी दीमकें जमा कर ली है।'

गाड़ी वाले को पक्षी की बात समझ में नहीं आई। उसने सिर्फ इतना कहा, 'तो मैं क्या करूँ।'

'ये मेरी दीमकें ले लो, और मेरे पंख मुझे वापस कर दो।' पक्षी ने जवाब दिया।

गाड़ी वाला ठठाकर हँस पड़ा। उसने कहा, 'बेवकूफ, मैं दीमक के बदले पंख लेता हूँ, पंख के बदले दीमक नहीं।' गाड़ी वाले ने 'पंख' शब्द पर जोर दिया था। (श्यामला ध्यान से सुन रही थी। उसने कहा, 'फिर') गाड़ी वाला चला गया। पक्षी छटपटा कर रह गया। एक दिन एक काली बिल्ली आई और अपने मुँह में उसे दबाकर चली गई। तब उस पक्षी का खून टपक-टपक कर जमीन पर बूँदों की लकीर बना रहा था। (श्यामला ध्यान से मुझे देखे जा रही थी और उसकी एकटक निगाहों से बचने के लिए मेरी आँखें तालाब की सिहरती-काँपती, चिलकती-चमचमाती लहरों पर टिकी हुई थीं)। कहानी कह चुकने के बाद, मुझे एक जबरदस्त झटका लगा। एक भयानक प्रतिक्रिया-कोलतार-जैसी काली, गंधक-जैसी पीली-नारंगी! 'नहीं, मुझमें अभी बहुत कुछ शेष है, बहुत कुछ। मैं उस पक्षी-जैसा नहीं मरूँगा। मैं अभी भी उबर सकता हूँ। रोग अभी असाध्य नहीं हुआ है। ठाठ से रहने के चक्कर से बँधे हुए बुराई के चक्कर तोड़े जा सकते हैं। प्राण शक्ति शेष है, शेष।' तुरंत ही लगा कि श्यामला के सामने फिजूल अपना रहस्य खोल दिया, व्यर्थ ही आत्म-स्वीकार कर डाला। कोई भी व्यक्ति इतना परम प्रिय नहीं हो सकता कि भीतर का नंगा, बालदार, रीछ उसे बताया जाए। मैं असीम दुख के

शेष पृष्ठ 7 पर.....

शुद्ध और साफ जल का मतलब

✍टी. के सिन्हा

जल या पानी अनेक अर्थों में जीवनदाता है। इसीलिए कहा भी गया है जल ही जीवन है। मनुष्य ही नहीं जल का उपयोग सभी सजीव प्राणियों के लिए अनिवार्य होता है। पेड़-पौधों एवं वनस्पति जगत के साथ कृषि फसलों की सिंचाई के लिए भी यह आवश्यक होता है। यह उन पांच तत्वों में से एक है जिससे हमारे शरीर की रचना हुई है और हमारे मन, वाणी, चक्षु, तथा श्रोत को तृप्त करता है। इसके बिना हम जीवित नहीं रह सकते। शरीर में इसकी कमी से हमें प्यास महसूस होती है और इससे पानी शरीर का संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। अत: यह हमारे जीवन का आधार है। अब तक प्राप्त जानकारियो के अनुसार यह स्पष्ट हो गया है कि जल अस्तित्व के लिए बहुत आवश्यक है इसलिए इसका शुद्ध साफ होना हमारी सेहत के लिए जरूरी है। शुद्ध और साफ जल का मतलब है वह मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक अशुद्धियों और रोग पैदा करने वाले जीवाणुओं से मुक्त होना चाहिए वरना यह हमारे पीने के काम नहीं आ सकता है।

रोगाणुओं जहरीले पदार्थों एवं अनावश्यक मात्रा में लवणों से युक्त पानी अनेक रोगों को जन्म देता है। विश्व भर में 80 फीसदी से अधिक बीमारियों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रदूषित पानी का ही हाथ होता है। विश्व भर में प्रति घंटे 1000 बच्चों की मृत्यु मात्र अतिसार के कारण हो जाती है जो प्रदूषित जल के कारण होता है।

याज्ञवल्क्य संहिता ने जीवाणु युक्त, गंदले, फेनिल, दुर्गन्धयुक्त, खारे, हवा के बुलबुले उठ रहे जल से स्नान के लिए भी निषेध किया है। लेकिन आज की स्थिति बड़ी चिन्ताजनक है। शहरों में बढ़ती हुई आबादी के द्वारा उत्पन्न किए जाने वाले मल-मूत्र, कूड़ें-करकट को पाइप लाइन अथवा नालों के जरिए प्रवाहित करके नदियों एवं अन्य सतही जल को प्रदूषित किया जा रहा है। इसी प्रकार विकास के नाम पर कल कारखानों, छोटे-बड़े उद्योगों द्वारा निकले जहरीले स्त्रावों द्वारा सतही जल प्रदूषित हो रहा है। जहां भूमिगत एवं पक्के सीवर नालों की व्यवस्था नहीं है, यदि है भी तो टूटे एवं दरार युक्त हैं अथवा जहां ये मल कचरे युक्त जल भूमिगत या किसी नीची भूमि पर प्रवाहित कर दिए जाते हैं वहां ये दूषित जल रिस-रिस कर भूगर्भ जल को भी प्रदूषित कर रहे हैं।

कैसी विडम्बना है कि हम ऐसे महत्वपूर्ण जीवनदायी जल को प्रगति एवं विकास की अंधी दौड़ में रोगकारक बना रहे हैं। जब एक निश्चित मात्रा के ऊपर इनमें रोग संवाहक तत्व विषैली रसायन सूक्ष्म जीवाणु या किसी प्रकार की गन्दगी अशुद्धि आ जाती है तो ऐसा जल हानिकारक हो जाता है। इस प्रकार के जल का उपयोग सजीव प्राणी करते हैं तो जल वाधित घातक रोगों के शिकार हो जाते हैं। दूषित जल के माध्यम से मानव स्वास्थ्य को सर्वाधिक हानि पहुंचाने वाले कारक, रोग जनक सूक्ष्म जीव हैं। इनके आधार पर दूषित जल जनक रोगों को निम्न प्रमुख वर्गों में बांटा जा सकता है।

दूषित जल से रोग जनक जीवों से उत्पन्न रोग

विषाणु द्वारा-पीलिया, पोलियो, गैस्ट्रो-इंटराइटिस, जुकाम, संक्रामक यकृत शोध, चेचक।

जीवाणु द्वारा-अतिसार, पेचिस, मियादी बुखार, अति ज्वर, हैजा, कुकुर खांसी, सूजाक, उपदंश, जठरांत्र शोथ, प्रवाहिका, क्षय रोग।

प्रोटोजोआ द्वारा-पायरिया, पेचिस, निद्रा रोग, मलेरिया, अमिबियोसिस रूग्णता, जियार्डियोसिस रूग्णता।

कृमि द्वारा-फाइलेरिया, हाइडेटिड सिस्ट रोग तथा पेट में विभिन्न प्रकार के कृमि का आ जाना जिसका स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

रोग उत्पन्न करने वाले जीवों के अतिरिक्त अनेकों प्रकार के विषैले तत्व भी पानी के माध्यम से हमारे शरीर में पहुंचकर स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। इन विषैले तत्वों में प्रमुख हैं कैडमियम, लेड, मरकरी, निकल, सिल्वर, आर्सेनिक आदि। जल में लोहा, मैंगनीज, कैल्सीयम, बेरियम, क्रोमियम, कॉपर, सीलीयम, यूरेनियम, बोरान, तथा अन्य लवणों जैसे नाइट्रेट, सल्फेट, बोरेट, कार्बोनेट, आदि की अधिकता से मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जल में मैग्नीशियम व सल्फेट की अधिकता से आंतों में जलन पैदा होती है। नाइट्रेट की अधिकता से बच्चों में मेटा हीमोग्लाबिनेमिया नामक बीमारी हो जाती है तथा आंतों में पहुंचकर नाइट्रोसोएमीन में बदलकर पेट का कैंसर उत्पन्न कर देता है। फ्लोरीन की अधिकता से फ्लोरोसिस नामक बीमारी हो जाती है। इसी प्रकार कृषि क्षेत्र में प्रयोग की जाने वाली कीटनाशी दवाईयों एवं उर्वरकों के विषैले अंश जल स्त्रोतों में पहुंचकर स्वास्थ्य की समस्या को भयावह बना देते हैं। प्रदूषित गैसे कार्बन डॉइआक्साइड तथा सल्फर डॉइआक्साइड जल में घुसकर जल स्त्रोत को अम्लीय बना देते हैं। अनुमान है कि बढती हुई जनसंख्या एवं लापरवाही से जहां एक ओर प्रदूषण बढेगा वहीं ऊर्जा की मांग एवं खपत के अनुसार यह मंहगा हो जाएगा। इसका पेयजल योजनाओं पर सीधा प्रभाव पड़ेगा। ऊर्जा की पूर्ति हेतु जहां एक ओर विशाल बांध बनाकर पन बिजली योजनाओं से लाभ मिलेगा वहीं इसका प्रभाव स्वच्छ जल एवं तटीय पारिस्थितिक तंत्र पर पड़ेगा जिसके कारण अनेक क्षेत्रों के जल मग्न होने व बड़ी आबादी के स्थानान्तरण के साथ सिस्टोमायसिस तथा मलेरिया आदि रोगों में वृद्धि होगी।

सुरक्षित जल

अत: सभी प्रकार के जल प्रदूषण से बचने के लिए आवश्यक है कि पूरे जल प्रबंधन में जल दोहन, उनके वितरण तथा प्रयोग के बाद जल प्रवाहन की समुचित व्यवस्था हो। सभी विकास योजनाएं सुविचारित और सुनियोजित हों। कल-कारखानें आबादी से दूर हों। जानवरों-मवेशियों के लिए अलग-अलग टैंक और तालाब की व्यवस्था हो। नदियां-झरनों और नहरों के पानी को दूषित होने से बचाया जाए। इसके लिए घरेलू और कल-कारखानों के अवशिष्ट पदार्थों को जल स्त्रोत में मिलने से पहले भली-भांति नष्ट कर देना चाहिए। डिटरजेंट्स का प्रयोग कम करके प्राकृतिक वनस्पति पदार्थ का प्रचलन करना होगा। इन प्रदूषणों को रोकने के लिए कठोर नियम बनाना होगा और उनका कठोरता से पालन करना होगा। मोटे तौर पर घरेलू उपयोग में पानी का प्रयोग करने से पहले यह आश्वस्त हो जाना चाहिए कि वह शुद्ध है या नहीं? यदि संदेह हो कि यह शुद्ध नहीं है तो निम्न तरीकों से इसे शुद्ध कर लेना चाहिए।

पीने के पानी को स्वच्छ कपड़े से छान लेना चाहिए अथवा फिल्टर का प्रयोग करना चाहिए।

कुएं के पानी को कीटाणु रहित करने के लिए उचित मात्रा में ब्लीचिंग पाउडर का उपयोग प्रभावी रहता है। वैसे समय-समय पर लाल दवा डालते रहना चाहिए। पानी को उबाल लें फिर ठंडा कर अच्छी तरह हिलाकर वायु संयुक्त करने के उपरान्त इसका प्रयोग करना चाहिए।

पानी को धूप में, प्रकाश में रखना चाहिए। तांबे के बर्तन में रखें तो यह अन्य बर्तनों की अपेक्षा सर्वाधिक शुद्ध रहता है। एक गैलेन पानी को दो ग्राम फिटकरी या बीस बूंद टिंचर आयोडीन या तनिक ब्लीचिंग पाउडर मिलाकर शुद्ध किया जा सकता है। चारकोल, बालू युक्त बर्तन से छानकर भी पानी शुद्ध किया जा सकता है। कुछ लोग हैलोजन की गोलियां डालकर भी पानी साफ रखते हैं।

(इण्यिन वॉटर पोर्टल से साभार)

हेलंग की घटना

✍सुनीता देवी, सचिव, र0म0म0

उत्तराखण्ड के चमोली जिले के हेलंग गांव में अपने जंगल से घास काट रही महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करते हुए वहां की पुलिस की तस्वीर हम सभी ने देखी है। अब यह हम सबके समक्ष एक प्रश्न खड़ा करती है। उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के लिए वहां के आम लोगों ने खासतौर पर महिलाओं ने जमकर संघर्ष किया है। लेकिन क्या पता था की उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के बाद भी उन्हीं को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। आज के इस तरह के हालातों को देखते हुए उत्तराखण्ड के जल-जंगल-जमीन के मुद्दों पर लड़ने वाले संगठनों को यह सोचने की आवश्यकता है। क्योंकि अब खामोश नहीं रहा जा सकता, यह लड़ाई अब केवल चमोली के हेलंग की नहीं बल्की हर जिले के हर गांव की है, क्योंकि इसी तरह का व्यवहार सभी महिलाओं के साथ आमतौर पर होता रहता है। घास काटना उसे सर या पीठ पर रखकर लाना फिर जानवरों को देना, क्योंकि अब पहाड़ में खेती अधिक रही नहीं बस थोड़ा बहुत पशुपालन ही बचा है, जिसके लिए घास लाकर पशुओं को देते हैं ताकि उनका पेट भर सके, और हमें दूध मिल सके जिससे की घर का थोड़ा खर्च भी चले। गांव से अधिकतर पुरूष रोजगार के लिए शहरों में गये हैं, और घर चलाने के लिए महिलाओं को पशुपालन पर निर्भर रहना पडता है। किंतु आज की स्थिति को देखकर शासन प्रशासन के साथ बात करने में भी डर लगती है या तो उनसे जवाब मिलेगा नहीं या फिर दुर्व्यवहार किया जाएगा। लेकिन यहां तो अपने ही वन पंचायत से घास लाने पर महिला के साथ ऐसा व्यवहार किया गया कितनी पीड़ा हुई होगी उस बहन को। कितनी खुश होगी जब उसका घास पूरा बन गया होगा, सोच रही होगी जब इस घास को मेरे घरवाले देखेंगे तो कितने प्रसन्न होगें, पर उसे क्या पता था कि एक महिला ही उसका घास उससे छीन लेगी, ये अधिकार उसे दिया किसने? यह बहुत ही शर्मनाक घटना है ऐसे लोगो को होश में लाने की जरूरत है। रचनात्मक महिला मंच किसी भी महिला का यह अपमान सहन नहीं करेगा और जरूरत पड़ने पर रचनात्मक महिला मंच इसके लिए आंदोलन भी करेगा।

स्वंय सहायता समूहों की मासिक बैठकों के आयोजन के दौरान ध्यान देने योग्य बातें

- समूह की बैठक गोल घेरे में बैठकर हो।
- बैठक की शुरूआत जनगीत अथवा लोकगीत से हो।
- सदस्य एवं श्रमयोग कार्यकर्ता आपस में परिचय करें।
- बैठक की शुरूआत समूह के सचिव द्वारा हो।
- अध्यक्ष बैठक का एजेंडा सदस्यों के बीच रखें।
- श्रमयोग कार्यकर्ता/श्रमसखी स्थानीय मुद्दों पर चर्चा प्रारम्भ कर सकते हैं।
- प्रत्येक सदस्यों को इन मुददों पर अपनी राय रखने का अवसर दिया जाना चाहिए।
- स्थानीय मुद्दों पर चर्चा होने के बाद ही सदस्य अपनी बचत राशि कोषाध्यक्ष के पास जमा करेगे।
- सदस्य आन्तरिक ऋण का लेन-देन करेंगे।
- सचिव कार्यवाही रजिस्टर में कार्यवाही दर्ज करेंगी व कोषाध्यक्ष आय-व्यय रजिस्टर में हिसाब किताब दर्ज करेंगी।
- सभी सदस्य कार्यवाही रजिस्टर में हस्ताक्षर करेंगे, अंगूठा लगाना वर्जित है।
- प्रत्येक बैठक के अंत में अगले माह में होने वाली बैठक का स्थान तय करना उचित होगा।
- अध्यक्ष द्वारा धन्यवाद देते हुए सभा समाप्त होगी।

रचनात्मक महिला मंच द्वारा जारी

आपसे निवेदन है

प्रिय मित्रो नमस्कार!

श्रमयोग एक स्वैच्छिक संस्थान है जो विगत 10 वर्षों से भारत वर्ष के उत्तराखण्ड राज्य में पहाड़ी जिलों अल्मोड़ा एंव पौड़ी गढ़वाल में कार्य कर रहा है। हम स्थानीय समुदाय को मजबूत सामाजिक पूंजी के निर्माण के लिये जन संगठनों में संगठित होने के लिये प्रेरित कर रहे हैं। श्रमयोग के प्रयासों से पिछले 10 वर्षों में लगभग 80 गाँवों में विशेषकर महिलाओं व बच्चों ने अपने आप को समुदाय आधारित संगठनों में संगठित किया है और आज ये संगठन स्थानीय मुद्दो पर अपनी आवाज मुखरता से उठा रहे हैं। आज ये संगठन ``श्रम-जन स्वराज अभियान'' व ``प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान'' के अन्तर्गत पंचायती राज सशक्तिकरण, स्थानीय संसाधन आधारित आजीविका संवर्धन एंव जल-जंगल-जमीन व जैव विविधता संरक्षण के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं।

श्रमयोग इन सब गतिविधियों के संचालन हेतु किसी सरकारी एंव गैर सरकारी स्त्रोत से आर्थिक मदद नहीं लेता, सभी गतिविधियां जन सहयोग से चलती हैं। संस्था जमीन से जुडकर जमीनी मुद्दों पर कार्य कर रही है। जिसका प्रभाव हमारे कार्यक्षेत्र में देखा जा सकता है किन्तु संसाधनों के अभाव में कार्यक्रम का विस्तार एक चुनौती है। क्योंकि कार्यक्रम को सुगम बनाने एंव अभियान को लगातार चलाने हेतु न्यूनतम मानव संसाधनों कि आवश्यकता होती हैं जिन्हें अपने जीवनयापन हेतु एक न्यूनतम नगद आय की आवश्यकता होती है।

लम्बे अनुभव के बाद हमने इस चुनौती से निपटने का एक वैकल्पिक रास्ता खोजा है - ``श्रम सखी''। श्रम सखी 9-10 गावों के बीच एक ऐसी स्थानीय सक्रीय महिला है, जो अभियानों की गतिविधियों को अपना अतिरिक्त समय देती हैं। क्योंकि महिने में अपने समय का एक बडा हिस्सा ये महिलाएं अभियानों को देती हैं, अत: स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर हमने यह तय किया कि इन महिलाओं का निश्चित मासिक मानदेय होना चाहिए, जो रू0 2000 मासिक तय है। वर्तमान में 7 श्रम सखियां अभियानों से जुड़ी हैं। जो अपने घरेलू काम के साथ अभियानों की गतिविधियों में सहयोग कर अपने परिवार के लिए नगद आय भी जुटाती हैं। आर्थिक रुप से कमजोर परिवारों से आने वाली इन श्रम सखियों को मिलने वाली यह नियमित मासिक आय उनके परिवारों को मजबूती देती है। अपने इस काम से इन महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है और इन्हें समाज में पहचान मिली है।

आपसे निवेदन है कि आप एक श्रम सखी के लिये आर्थिक सहयोग कर इन्हें आगे बढ़ने में सहयोगी बनें। हम इसके लिये आपसे श्रमयोग को रू0 2,000 मासिक आर्थिक मदद करने का निवेदन करते हैं। अपनी क्षमता के अनुरुप सहयोग करें। आपका सहयोग इस अभियान के विस्तार में सहयोगी होगा।

धन्यवाद

टीम श्रमयोग।

खबरें कार्य क्षेत्र से

श्रमयोग संस्थान सोसायटी पंजीकरण एक्ट के तहत पंजीकृत एक जन संस्थान है। श्रमयोग के द्वारा उत्तराखण्ड राज्य व देश के अलग-अलग हिस्सों में जन समुदायों के साथ मिलकर विकासात्मक गतिविधियों को अन्जाम दिया जाता है। यहाँ श्रमयोग के कार्य क्षेत्र की खबरें दी जा रही है। बच्चे अपने क्षेत्र में बदलते तापमान पर नजर रख रहे हैं। यहां उनकी अभिव्यक्ति को स्थान दिया जा रहा है।

– सम्पादक

कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट

नैनीडांडा क्लस्टर
आसना

जुलाई का महीना हर तरफ हरी भरी घास, पहाडों का बहुत ही सुन्दर दृश्य हो जाता है। बरसात के महीने जितना खेती के लिए लाभकारी हैं, उतने ही चुनौतियों से भरे माह भी होते हैं। हर तरफ पानी के धारे निकलना शुरू हो जाते हैं, रोलों में पानी बढ़ जाता हैं, अभी तो बरसात थोड़ी ही हुई है, परन्तु इसका असर भयावह है। पहाडों का टूटना, सड़कों का धस जाना प्रारम्भ हो गया है। बच्चें जब स्कूल जाते हैं तो घरवालों को चिंता बनी रहती है। बणांसी गाँव से स्कूल को जाने के लिए रास्ते में दो रोले हैं, जिनमें आजकल बहुत अधिक पानी बह रहा हैं। रोलों में पैर फिसल कर गिर जाने का डर हमेशा बना रहता है। घर से किसी एक व्यक्ति को बच्चों को स्कूल तक छोड़ने का काम और बढ़ जाता है। इस वक्त खेतों की सफाई करने का समय है, अब गहत, रियांस जैसी दालों को बोऐंगे।

मार्च माह में महिलाओं को सब्जियों के बीज मिले थे, जिसमें बैगन, मूली, धनियां, बीन, भिण्डी, खीरा, ओगल शमिल थे। इस माह इन बीजों की प्रतिपुष्टि ली गई की यह बीज किस-किस सदस्याओं के खेत में उगे हैं और किस सदस्या के खेतो में नहीं उगे हैं। इस बार श्रम उत्पाद (हल्दी) का एकत्रीकरण भी किया गया। महोत्सव की तैयारी को लेकर भी चर्चा प्रारम्भ की गई।

चाँच-झीमार एंव रथखाल क्लस्टर
राकेश, दाड़िमी

इस माह लगभग सभी समूहों की बैठकें आयोजित की गयी। जिसमें सबसे पहली बैठक पल्ली गांव में की गयी, यहां हर माह पंचायती राज पर चर्चा होती है, इसके बाद हितसीमली में बैठक की गयी जिसमें महिलाओं का कहना था की एस.डी.एम को ज्ञापन देने के बाद हमारे यहां गैस की गाड़ी तो आने लगी है, किंतु हमने जो आदर्श बस डिपो को लेटर लिखा था, उसका अभी हल नहीं निकल पाया है। क्योंकि हमारे क्षेत्र में यातायत के संसाधनों की बहुत कमी है, जिसके कारण बाजार का सामान यहां बहुत मंहगा मिलता है। दाड़मी में बैठक के दौरान महिलाओं ने यह निर्णय लिया कि हम लोग 3 दिन रास्तों को साफकरने के लिए श्रमदान करेंगे, जिसको देखकर अन्य समूहों ने भी श्रमदान से रास्तों को साफकरने का फैसला लिया। इस बार की सारी बैठकों में वन पंचायतों के माइक्रोप्लान पर चर्चा की गयी जिसमें महिलाओं को बताया गया की किस प्रकार वन पंचायतों के प्लान तैयार किये जाते है। बीजों के फीडबैक लिए गये तथा हर समूह की बैठक में उस गांव की ऊंचाई ली गयी क्योंकि इस बार मंच बीजों को लेकर रिसर्च कर रहा है कि कौन सी जगह कौन सा बीज लगेगा, फिर भी समूहों में राई, पालक, धनिया, तथा मटर के बीज की मांग थी, साथ-साथ बैठकों में इस बार हस्ताक्षर अभियान चलाया गया था जिसमें मंच अपने विधायक को एक ज्ञापन देने वाला है जिसमें स्वास्थ तथा पानी की समस्या को लेकर बात कही गयी है। क्षेत्र में आजकल बाघ का आंतक छाया है, जिसके कारण लोग डरे हुए हैं। दाड़मी के विवके स्वयं सहायता समूह ने इस बार श्री देव सुमन के शहादत दिवस पर वृक्षारोपण किया जिसमें रीठा और बांज के पेड़ लगाए गए। इस माह गडकोट क्षेत्र में एक नया समूह बनाया गया जिसमें पूरे 20 सदस्य हैं, अब मंच अपना कार्यक्षेत्र गडकोट में बढ़ाएगा, जिससे आगे चलकर गडकोट एक अलग कलस्टर के रूप में उभरेगा।

गिगंडे क्लस्टर
देवकी देवी, श्रमसखी

जुलाई माह में गिगड़े क्लस्टर में गठित गिंगडे, उजलकना, काने, खलपाटी, रिक्कांसी, मटवांस व डयौना गॉवो में सभी समूहों की मासिक बैठकों का आयोजन उनकी नियत दिनांक व सदस्याओं द्वारा निर्धारित समय पर किया गया। बैठकों में वन पंचायतों के माइक्रोप्लान को लेकर चर्चा की गई। सदस्याओं का कहना था कि हमें अपनी वन पंचायतो के बारे में पता तो है। आज से 10 वर्ष पूर्व हम लोग लकड़ी व चारा के लिए पूर्ण रूप से अपनी वन पंचायतों पर निर्भर थे। परंतु जैसे-जैसे पलायन हुआ परिवारों में सदस्यो की संख्या कम हुई वैसे-वैसे खेती और पशुपालन का कार्य भी कम हो गया और हमारी निर्भरता जंगलो पर कम हो गई। अब हमारी आवश्यकताओं की पूर्ती निजि भूमि से पूरी हो जाती है। अब तो जंगल जाने में जंगली जानवरो का खतरा भी रहता है। संगम स्वयं सहायता समूह ग्राम ड्यौना की सदस्याओं का कहना था कि उनकी वन पंचायत का माइक्रोप्लान बना था जिसमें प्लान बनने के बाद वन पंचायतों में कार्य भी प्रारम्भ हो गये हैं।

अगस्त माह में विधायक को दिये जाने वाले ज्ञापन पत्र को सदस्याओं के सामने पढ़ा गया। जिसमें सदस्याओ ने अपनी पूर्ण सहमति दी। ग्राम उजलकना में प्रण स्वयं सहायता समूह की बैठक में सदस्याओं द्वारा बढ़ते सामाजिक असुरक्षा को लेकर चर्चा की। समूहों की जिन सदस्याओं ने श्रम-उत्पाद में प्रतिभाग किया था समूह की बैठकों में उन सभी सदस्याओं का भुगतान भी किया गया। फरवरी माह में मंच द्वारा बीज वितरित किये गये थे उन सभी बीजो की प्रतिपुष्टी ली गई। जिसमें सदस्याओ का कहना था कि ओगल, बीन के बीजों को हमने मार्च माह में ही बो दिया था इनका उत्पादन बहुत अच्छा हुआ। अन्य बीजों को बोने के लिए प्रर्याप्त पानी नहीं था इसलिए हमने अन्य बीज चतुरमास में बोये हैं। जिनमें अभी अकुरण हुआ है। बैगन के पौधों में बैंगन लगने को तैयार हैं।

जमरिया व थला क्लस्टर
सुरेन्द्र, श्रमयोग

जुलाई माह में जमरिया कलस्टर की सभी समूहों की मासिक बैठकों का आयोजन किया गया। जमरिया, सांकर, बल्यूली, बन्द्राण, नागतले, झड़गाँव आदि गाँवों में गठित समूहों की महिलाऐं प्रतिमाह वर्ष 2015-16 से लगातार गांव स्तर पर बैठकों का आयोजन कर रही हैं। जमरिया कलस्टर के सभी गाँव कार्बेट नेशनल पार्क से लगे है। जंगली जानवरों का खतरा हमेषा बना रहता है। कलस्टर के बल्यूली गाँव की बैठक में सदस्यों ने हाथी का आंतक, बाघ, तेंदूआ जैसे जंगली जानवरों के भय के बारे में बताया कि आजकल पूरे क्लस्टर में आदमखोर बाघ का बहुत डर बना हुआ है। महिलाओं का कहना है कि घास, लकड़ी, लाने के लिए जंगलों में जाना मुश्किल हो गया है।

बैठक में वन पंचायतों की बात की गई। वन पंचायतें निष्क्रीय है। ग्रामीणों को यह भी जानकारी नहीं है कि हमारे वन सरपंच कौन हैं और कमेटी में उनके साथ आठ सदस्य कौन-कौन हैं। जब श्रमयोग साथियों द्वारा इस बावत पता किया गया तो पटवारी सुमाघ शाह द्वारा बताया गया कि चुनाव के माध्यम से यहां की प्रबंधन समिति बनी हुई है। बल्यूली की वन पंचायत समिति में अर्चना बुदोडी सरपंच व जमरिया वन पंचायत समिति में धना देवी सरपंच हैं। उन्होंने प्रत्येक सदस्य के नाम भी बताये। इस बात से समूह को अवगत कराया गया।

थला क्लस्टर में भी उक्त सभी बिन्दुओं पर समूह की सदस्यों ने खूब चर्चाऐं की। विधायक को मांग पत्र देने में सहमति जताई और बैठक के दौरान हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। थला क्लस्टर के नदोली गाँव की किरन स्वयं सहायता समूह की सदस्या श्रीमती हेमा देवी ने श्रम उत्पाद में 163.1 किलोग्राम हल्दी का उत्पादन का रू0 13863/- प्राप्त किया जो पूरे क्लस्टर में सबसे ज्यादा हैं। इसी तरह थला क्लस्टर में कुल रू0 132265/- भुगतान किया गया। दोनो क्लस्टर में श्रमयोग पत्र का सदस्यता अभियान जारी है। समूह की सदस्याऐं पत्र के लिए लिख पढ़ रहीं हैं।

जसपुर क्लसटर
आसना, श्रमयोग

रचनात्मक महिला मंच का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। सदस्यायें बैठकों में अपनी समस्याओं को रख रही हैं। पिछले माह मंच द्वारा अपनी तीन मुख्य सामुदायिक समस्याओं को लेकर स0डी0एम0 को ज्ञापन दिया गया था। जिसमें पहला सड़क होने के बाद भी गैस की गाडी का समय पर न आना, दूसरा घर-घर नल, घर-घर जल योजना के तहत नलों में पानी का न आना, तीसरा पेडों में लटकते बिजली के तारों को व्यवस्थित करने के लिये पेडों की लॉपिंग का काम। ज्ञापन के बाद बिजली विभाग ने अलग-अलग क्षेत्रों में दिनांक वार लॉपिंग के लिये समाचार पत्रों में इश्तेहार भी दिया। पर नतीजा ढाक के तीन पात। इसलिए मंच के पदधिकारियों ने यह निर्णय लिया कि अब अपनी समस्याओं के समाधान के लिये आन्दोलन करेंगे।

मंच की अध्यक्षा का कहना था कि जो हमारे विधायक हैं वैसे तो वोट मांगने आते हैं परन्तु जब काम करने का समय होता है तब कोई नजर नहीं आता। इसलिए इस बार विधायक को बुलाकर अपनी समस्यायें भी उनके सामने रखेंगे। महिलाएं अध्यक्षा की बात पर सहमत हुई और कहा कि हम विधायक से बात करने के लिए तैयार हैं।

साथ ही साथ इस माह की बैठकों में सदस्याओं को कूड़े के निस्तारण के बारे में जानकारी दी गई। जिसमें सदस्याओं को जैविक, अजैविक और इलेक्ट्रनिक कूड़े के बारे में बताया गया। इसे किस तरह से अलग-अलग किया जा सकता है इस पर बात हुई। अध्यक्षा ने सदस्याओं से अभी से महिला महोत्सव की तैयारी करने को कहा। असोज (अक्टूबर) के माह में सभी महिलाओं की व्यस्तता बढ़ जाती है, जिससे महिलाएं समय नहीं दे पातीं। इसलिए प्रत्येक समूह के पदाधिकारी पहले ही सभी महिलाओं को सूचित कर के तैयारी प्रारम्भ करें।

घचकोट क्लस्टर
विजय, श्रमयोग

जुलाई माह की घचकोट क्लस्टर की मासिक बैठकों में श्रम सखी बहिन विमला देवी जी के साथ मैंने स्वयं बैठकों में प्रतिभाग किया। बैठक में विगत माहों में श्रमयोग सदस्यों द्वारा किये गये वन पंचायतों के सूक्ष्म स्तरीय नियोजन के कार्यों को समूहों में साझा किया तथा विगत माहों में समूह द्वारा की गई गतिविधियों पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया।

सदस्याओं ने विगत माहों में दिये गये बीजों की गुणवत्ता को बहुत अच्छा बताया तथा आगामी सितम्बर माह में धनिया, राई, पालक, मैंथी के बीजों की माँग रखी। समूह के माध्यम से विगत वर्ष में ग्राम सभा सकरखोला में धारा विकास का कार्य हुआ था, उस कार्य की वजह से लम्बे समय से सूखे पड़े नौले में पानी की बढ़ोत्तरी को देखकर ग्रामसभा के लोग खुश हैं। सदस्याओं ने मनरेगा में रोजगार न मिलने पर नाराजगी जताई। सरकारी विभागों जैसे कृषि विभाग, उद्यान विभाग, पशुपालन विभाग में चल रही योजनाओं का ग्राम स्तर पर पता न लग पाने की बात कही। इन सभी समस्याओं के निदान के लिए समूहों ने अगले माह क्लस्टर स्तर पर स्वयं सहायता समूहों की एक संयुक्त बैठक बुलाकर इन समस्याओं पर एक ठोस कार्ययोजना बनाने की बात कही।

भ्याड़ी क्लस्टर
पंकज, श्रमयोग

लगभग चार महीनों के बाद गांवो में जाना व बैठकें करना एक अलग अनुभव था। पिछले चार महीनों से वो हमारा इंतजार कर रहे थे, किसी नये व्यक्ति को लगे कि वे काफी गुस्से मे हैं और कहना चाह रहे हैं कि तुम तो ईद के चाँद हो गए। अपनेपन को दिखाते हुए उनका नाराज होना और डांटना हममे काफी उत्साह भर रहा था। पिछले चार महिने माइक्रोप्लानिंग की व्यस्तता में निकले। गाँवों में जाना ही नहीं हुआ। हालांकि श्रम सखियों ने अपनी जिम्मेदारी खूब निभाई।

अपनी समस्याओं के लेकर महिलाओं का कहना था कि गैस की गाड़ी आ रही है लेकिन सिलिन्डर का भार 30 किलो की जगह 26-27 किलो ही है, अब गड्डों पर सड़क है सड़क पर गड्डे नही। पिछले दो महीनों से लॉपिंग की आड़ में लगातार 10-12 घण्टे की बिजली कटौती हो रही है, लेकिन लॉपिंग के नाम पर गांव मे कोई नही आया, अपने किए वादों पर जन प्रतिनिधि फेल होते दिख रहे हैं। इसी संदर्भ में मंच ने अगले माह जनप्रतिनिधियों से सीधे मिलने का फैसला लिया है। श्रमयोग पत्र की सदस्यता अभियान पर भी महिलाओं से चर्चा की गई। इन्ही सब बातों के साथ इस बार कलस्टर की बैठके पूर्ण हुई।

बाल मंच के पर्यावरण चेतना केन्द्रों की रिपोर्ट

दिनाँक	प्रात: 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)				सांय 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)			
	गिगड़े सल्ट	औंलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट	गिगड़े सल्ट	औंलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट
1 जुलाई	25	24	19	30	26	25	20	31
2 जुलाई	25	23.5	17	31	26	26	22	31
3 जुलाई	25	25	18	30	26	26.5	20	31.5
4 जुलाई	26	24	19	30	27	24	21	31.5
5 जुलाई	27	25	18	29	29	25	20	32
6 जुलाई	28	26	20	30.5	29	26	24	32.5
7 जुलाई	27	25	19	31	27	26.5	25	32.5
8 जुलाई	27	24.5	17	30.5	27	25	19	31
9 जुलाई	27	24	19	30	27	25.5	16	29.9
10 जुलाई	27	25	18	30	27	26	21	30
11 जुलाई	27	24.5	20	29.5	27	26	23	31
12 जुलाई	26	24	19	29	27	25	21	31
13 जुलाई	25	25	19	30	27	26	20	30
14 जुलाई	26	26	19	29.5	27	27	19	29.9
15 जुलाई	26	26.5	20	30	29	28	21	29.5
16 जुलाई	27	27	20	29.5	29	28	22	30
17 जुलाई	27	26.5	18	29	29	27.5	21	31.5
18 जुलाई	27	26	19	30.5	29	27	20	32
19 जुलाई	27	25	19	30.5	29	25.5	20	31.5
20 जुलाई	26	24.5	17	30.5	29	25	19	30
21 जुलाई	26	25	18	29	29	26	20	29.5
22 जुलाई	26	26	19	29	29	27	20	29
23 जुलाई	26	25.5	18	29	29	26.5	20	30.5
24 जुलाई	27	26.5	17	29	29	27	21	30
25 जुलाई	27	27	19	29	29	28	20	30
26 जुलाई	26	24	14	29	27	25	20	30
27 जुलाई	25	23.5	18	29	.....	24	21	30
28 जुलाई	.....	24	17	28.5	.....	24.5	20	29
29 जुलाई	.....	25	14	28	.....	26	20	29
30 जुलाई	.....	25.5	18	28	.....	25	19	29

चाँच धारा विकास कार्यक्रम

26 जुलाई, 2022

स्रोत का नाम	पी0एच0			टी0डी0एस0		
	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग
डौठा पानी नौला	6.7	6.7	6.7	26	26	26
धारा पानी	7.2	7.2	7.2	39	39	39
शिव मन्दिर नौला	7.2	7.2	7.2	40	40	40
हैंड पंप नौला	7.8	7.8	7.8	35	35	35

सद्भावना यात्रा 2022: यात्रा वृतांत-2

हम सबकी है कामना, सद्भावना, सद्भावना

भुवन पाठक, यात्रा संयोजक

दूसरे दिन के कार्यक्रम के तहत हम पुन: प्रेरणा अंशु के कार्यक्रम में पहुंचे। इस बार आयोजकों के बुलावे पर वहाँ गये। आज वहाँ काफी नये लोगों से मिलना हुआ। जन गीत के साथ हमने सद्भावना यात्रा की बात व यात्रा के उद्देश्य साझा किये। यह एक तरह का एकतरफा वकत्व्य जैसा था। वहां मौजूद लोगों ने हमारी बात सुनकर अपनी सहमति जताई पर गहराई से संवाद नहीं हो पाया। असल में वह मंच भी उस तरह का नहीं था। लोग अलग तैयारी के साथ वहाँ आये थे। फिर भी मौजूद लोगों से बात करना अच्छा रहा। कार्यक्रम के बाद हमने थोड़ा झिझक के साथ पहला विधिवत सांस्कृतिक जलूस निकाला। जनगीत गाये, कौमी एकता के नारे लगाये। भाईचारा जिंदाबाद के नारों से दिनेशपुर का बाजार गूंज उठा। गोपाल भाई, पी सी तिवारी, प्रभात ध्यानी की दमदार आवाज, वरिष्ठ साहित्यकार पंकज बिष्ट, विजय शंकर शुक्ल, ईस्लाम हुसैन, पद्म श्री बसंती बहिन, छात्र नेता भारती पाण्डे, सुन्दर आदि अनेक नामों की मौजूदगी ने हमारा मनोबल बढ़ाया। यहाँ से जो हमारा टैंपो बड़ा वो 22 जून तक बना रहा। यहाँ से हम प्रभात ध्यानी के साथ रामनगर को चलते हैं, वहां मनमोहन अग्रवाल हमारी मेजबानी के लिए तैयार थे।

रात को यात्रा दल दिनेशपुर से गुलरभोज जलाशय होते हुये रामनगर पहुंचा। आजकल भीषण गर्मी के चलते गुलरभोज डैम में पानी कम है। इसके किनारे ताजा मछली पकड़ने वाले भी नहीं दिखे। पूछने पर पता चला कि अब ठेका जिसका है वह यहाँ नहीं बेचता है। डैम के नीचे और ऊपर के गाँव हमेशा बाढ़ के खतरे से घिरे रहते हैं। 2011-12 में भीषण बाढ़ से यहाँ बहुत नुकसान हुआ। डैम के ऊपर की ओर पहाड़ से आये परिवार रहते हैं। जिनमें कपकोट, दानपुर से आये परिवार हैं जो अब यहीं के हो गये हैं। लाल सिंह कुप्पा, हरे सिंह कुप्पा जैसे कुछ नाम हैं। इस और इस जैसे अन्य जलाशयों को जलक्रीडा, मत्स्य पालन, सिंचाई जैसे उपयोग के लिए इनका विकास किया जाना बाकी है।

तेज हवा व बारिश के बीच हम रामनगर पहुंचे। वहाँ मनमोहन अग्रवाल जी गर्मजोशी से हमारे स्वागत के लिए खड़े थे। अग्रवाल जी का परिवार कारोबारी परिवार है, परन्तु उनका सामाजिक कामों व राज्य आन्दोलन से सक्रिय रिश्ता रहा है। प्रभात ध्यानी तो दिनेशपुर से ही साथ थे। यात्रा टोली दो हिस्सों में बट गयी। सयाने लोग प्रभात दा के घर रुक गये बाकी लोग टी0आर0सी0 में रुके। अगले दिन सुबह प्रभात ध्यानी के घर पर नाश्ते का इंतजाम हुआ। प्रभात ध्यानी घर पर अकेले रहते हैं क्योंकि उनकी बेटियां पढाई के लिए और पत्नी पढ़ाने के लिए घर से बाहर हैं।

बारिश के कारण थोड़ा बिलंब के बाद यात्रा दल के स्वागत के लिए रामनगर के लोग शहीद स्मारक पर एकत्र हो गये। उषा पटवाल, मुनीष कुमार, हाजी शेख अहमद, सुनीता बिष्ट, रहीश अहमद, सरस्वती जोशी, लालमणि, किरन आर्या समेत कई लोग इस कार्यक्रम में भागीदार बने। शहीद स्थल पर यात्रा दल के स्वागत के बाद वक्ताओं ने सद्भावना यात्रा की आवश्यकता तथा इसके लिए व्यापक एकता पर बल दिया। सभा के बाद यात्रा एक सांस्कृतिक जलूस के रूप में जन गीत गाते हुये, नारे लगाते हुये रामनगर की मुख्य सड़कों से गुजरी। इस दौरान अनेकों राहगीरों ने भी यात्रा में भागीदारी की। सड़कों पर जन गीत गाते और कौमी एकता के नारे लगाते हम रोमांच का अनुभव कर रहे थे।

जब हम सब जो साम्प्रदायिक राजनीति के खिलाफहों। सोशल मीडिया के आतंक से अवसाद में हों, एसे माहौल में आपको सड़कों पर हिंदू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई आपस में हैं भाई-भाई का नारा लगाने का मौका मिल जाए तो रोमांचित होना लाजमी था। लगभग पांच किलोमीटर लंबे चले जलूस का नेतृत्व रामनगर के जोशिले नेता प्रभात ध्यानी कर रहे थे। गोपाल भाई के गीत और आवाज सिहरन पैदा करने वाली थी। यही रैली थी जिसने हमारे डर को उखाड़ फैंका हम पूरी यात्रा के दौरान इस रैली को दोहराते रहे। इसके बाद यह रैली व्यापार मण्डल सभागार में सभा में तब्दील हो गई। जहाँ पुन: भाई चारा, कौमी एकता और सामाजिक सद्भाव के लिए संकल्प लिया गया। संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा की सौगंध उठाई गयी। उसके बाद यात्रा अगले पडाव को शुरू हुई। अगला पड़ाव नैनीताल है...।

नैनीताल शब्द बड़ा ही मनमोहक है, केवल मेरे लिए नहीं बल्कि सबके लिए। सबका अपने-अपने हिस्से का रोमांच। हमारे लिए नैनीताल होने के अनेक मतलब थे। वोट क्लब आन्दोलन का नैनीताल, छात्र संघर्ष वाहिनी का नैनीताल, उत्तराखंड बुलेटिन का नैनीताल, राज्य आंदोलन का नैनीताल, जागर, पहाड़, युगमंच और उत्तरा व नैनीताल समाचार का नैनीताल और भी अनगिनत घटनाओं का नैनीताल, गिर्दा का नैनीताल। इन तमाम नैनीतालों को याद करने उनसे सीखने हम नैनीताल पहुंचे। साथियों ने नैनीताल समाचार में बैठक का आयोजन किया था। यात्रा के स्वागत के पश्चात बैठक की शुरुआत हुई। बैठक की अध्यक्षता इतिहासकार घुमक्कड़ शेखर पाठक ने व संचालन नैनीताल समाचार के संपादक राजीव लोचन शाह ने किया। राजीव लोचन शाह ने नैनीताल की आन्दोलन एंव बौद्धिक तथा साहित्य व संस्कृति परंपरा से परिचय कराया। यात्रा दल ने यात्रा के उद्देश्य तथा कार्यक्रम से सबको परिचित कराया। उत्तरा की संपादक उमा भट्ट ने पहाड़ की महिलाओं के जीवन और उनकी विशेषताओं पर बात रखी। शेखर पाठक ने उत्तराखण्ड में सौ साल के लोकनायको और आन्दोलनों का पूरा खाका हमारे सामने खींचा। यात्रा में सावधानी तथा रास्ते के तमाम संपर्कों की सूची उन्होंने हमें सौंपी। औपचारिक बैठक के बाद भी देर रात तक विभिन्न मसलों पर बात होती रही। बैठक में दिनेश लोहनी, चंपा उपाध्याय, उमा भट्ट, शेखर पाठक, माया चिलवाल, जय जोशी, अजय कुमार, हेमलता सहित यात्रा दल के इस्लाम भाई, पद्मश्री बसंती बहिन, गोपाल भाई समेत अनेक साथियों ने भाग लिया। बैठक के बाद रात में देर तक शेखर पाठक और राजीव लोचन जी ने यात्रा दल का मार्गदर्शन किया।

यात्रा के चौथे दिन अब हम मुक्तेश्वर में हैं। आज यात्रा का रात्रि प्रवास छतौला गाँव में है। मुक्तेश्वर चोटी की लगभग जड़ में बसा यह गाँव तब तक नहीं दिखाई देता है जब तक आप गाँव के माथे में ना पहुँच जायें। बाहर से ना के बराबर दिखाई देने वाला यह गाँव अन्दर से बहुत आतंकित दिखाई देता है। एक तरफ स्थानीय निवासियों के सुंदर पारंपरिक शिल्प के शानदार घर, ढालदार छतें व मिट्टी से लिपे पुते पठार वाले आंगन। जिनके आसपास शानदार बगीचे, और उसी गाँव में भीमकाय निर्माण जो न केवल भद्दे हैं बल्कि स्थानिकता को नीचा दिखाते प्रतीत होते है। हम सब इन निर्माणों को देखकर विस्मित से थे और लगातार इस पर बात कर रहे थे। यात्रा के दौरान सामुहिक तौर पर गाँव में प्रवास रोमांचक घटना प्रतीत हो रही थी। हम सब आंगन में पसर गये। दिन में खाना नहीं खाया था तो भूख से ज्यादा खाने की ईच्छा मचल रही थी। इस्लाम भाई से सौ रुपये का चंदा लेकर मैगी मगाई गयी। निशांत, नरेन्द्र और सुन्दर ने शानदार मैगी और काली चाय का इंतजाम कर दिया। गाँव के दो युवा साथी भुवन व लक्ष्मण लगातार हमारे साथ बने थे। खष्टी पारिवारिक समारोह के चलते हल्द्वानी में रूकी थी। तब तक निर्मला और उसके पति भी वापस आ गये जो अस्पताल चैकअप के लिए हल्द्वानी गये थे। उनको गले और छाती का संक्रमण हो गया था। इतने मात्र के लिए भी 80 किलोमीटर आज भी जाना पड़ता है। कुछ गाँव वालों से वहाँ चल रहे भीमकाय निर्माण पर बात करने लगे तो पता चला कि निर्माण गाँव वालों द्वारा वर्षो पहले बेची गयी जमीन पर दिल्ली वाले कर रहे हैं। पहले यह जमीनें हल्द्वानी के किसी व्यापारी ने औने-पौने दामों में खरीदी। अब दिल्ली के नामी गिरामी लोगों को ऊंची कीमतों पर बेचीं है। इनमें से कोई दिल्ली में मेडिकल से जुड़े व्यापारी को बेची गयी है। जिसका सबसे बड़ा मकान बन रहा था। जिसकी छत बड़ी ही अजीब और टेड़े मेड़े तरीके से बन रही थी। किसी ने कहा चार करोड़ केवल छत पर लगा तो किसी ने कहा कि नहीं छ: करोड़ लगा। तरह तरह की कहानियाँ तैर रहीं थी। गाँव वालों ने बताया कि किस तरह सामाजिक कार्यकर्ता निर्मला के साथ मिलकर इसके खिलाफ लड़ाई लड़ी, लेकिन प्रशासन ने गाँव वालों की कुछ भी नहीं सुनी। अब लोग सख्त भू-कानून के लिए लड़ना चाहते हैं पर जानते हैं कि ये केवल उनके बूते की बात नहीं है।

इस बीच दो तीन घरों से बिस्तर का इंतजाम किया गया। एक टीम रात सोने का इंतजाम और एक टीम रात के खाने की ब्यवस्था में लग गयी। पति की अस्वस्थ होने के बावजूद निर्मला सब कामों को देख व कर रही थी। हम जो पहाड़ में जमीनों की बिक्री, लूट, भू-कानून जैसे सवालों पर गंभीर विमर्श में उलझे रहे। सामने खूब घना मिश्रित वन अपने पूरे गौरव के साथ अतिक्रमण और भूमाफिया को डराने की कोशिश कर रहा था। जैसे कोई पहाड़ी कुत्ता अनजान मेहमान को डराने की नाकाम कोशिश कर रहा हो। सुंदर और अद्भुत चिड़ियाओं का आना जाना बना रहा. पूरी तरह अंधेरा होने तक हम पटांगण में डटे रहे।

फिर चूल्हे पर बने साग, रोटी और भात पेट भर खाने के बाद सोने के चाख में डेरा डाला गया। यात्री थके नहीं होने के बावजूद एक-एक कर धरासायी होते गये। एका एक रात दो बजे दरवाजे पर कुड़ी की आवाज ने डरा दिया। दरवाजा खोलने पर पता चला कि घर पर आज अकेली खष्टी की माता जी अपने दैनिक कामों के लिए तैयार है। हमें लगा गलत समय पर उठ गयीं हैं, पर पता चला कि वो रोज इसी समय से काम धंधे पर लग जाती हैं। अगली सुबह उठने के बाद सबसे पहले वही पंचायत हुयी कि रात किसने क्या समझा जब 2 बजे कुंडी खड़की।

क्रमश:

पक्षी और दीमक....पृष्ठ-7 का शेष

खारे मृत सागर में डूब गया। श्यामला अपनी जगह से धीरे से उठी, साड़ी का पल्ला ठीक किया, उसकी सलवटें बराबर जमाईं, बालों पर से हाथ फेरा। और फिर (अंगरेजी में) कहा, 'सुंदर कथा है, बहुत सुंदर!' फिर वह क्षण-भर खोई-सी खड़ी रही, और फिर बोली, 'तुमने कहाँ पढ़ी?' मैं अपने ही शून्य में खोया हुआ था। उसी शून्य के बीच में से मैंने कहा, 'पता नहीं... किसी ने सुनाई या मैंने कहीं पढ़ी।' और वह श्यामला अचानक मेरे सामने आ गई, कुछ कहना चाहने लगी, मानो उस कहानी में उसकी किसी बात की ताईद होती हो। उसके चेहरे पर धूप पड़ी हुई थी। मुखमंडल सुंदर और प्रदीप्त दिखाई दे रहा था। कि इसी बीच हमारी आँखें सामने के रास्ते पर जम गईं।

घुटनों तक मैली धोती और काली, सफेद या लाल बंडी पहने कुछ देहाती भाई, समूह में चले आ रहे थे। एक के हाथ में एक बड़ा-सा डंडा था, जिसे वह अपने आगे, सामने किए हुए था। उस डंडे पर एक लंबा मरा हुआ साँप झूल रहा था। काला भुजंग, जिसके पेट की हलकी सफेदी भी झलक रही थी। श्यामला ने देखते ही पूछा, 'कौन-सा साँप है यह?' वह ग्रामीण मुख छत्तीसगढ़ी लहजे में चिल्लाया, 'करेट है बाई, करेट।' श्यामला के मुँह से निकल पड़ा, 'ओफ्फो! करेट तो बड़ा जहरीला साँप होता है।' फिर मेरी ओर देख कर कहा, 'नाग की तो दवा भी निकली है, करेट की तो कोई दवा नहीं है। अच्छा किया, मार डाला। जहाँ साँप देखो, मार डालो, फिर वह पनियल साँप ही क्यों न हो।' और फिर न जाने क्यों, मेरे मन में उसका यह वाक्य गूँज उठा, 'जहाँ साँप देखो, मार डालो।' और ये शब्द मेरे मन में गूँजते ही चले गए। कि इसी बीच... रजिस्टर में चढ़े हुए आँकड़ों की एक लंबी मीजान मेरे सामने झूल उठी और गलियारे के अँधेरे कोनों में गरम होने वाली मुट्ठियों का चोर हाथ। श्यामला ने पलटकर कहा, 'तुम्हारे कमरे में भी तो साँप घुस आया था, कहाँ से आया था वह?' फिर उसने खुद ही जबाब दे लिया, 'हाँ, वह पास की खिड़की में से आया होगा।'

खिड़की की बात सुनते ही मेरे सामने, बाहर की काँटेदार झाड़ियाँ, बेंत की झाड़ियाँ आ गईं, जिसे जंगली बेल ने लपेट रखा था। मेरे खुद के तीखे काँटों के बावजूद, क्या श्यामला मुझे इसी तरह लपेट सकेगी।

समाप्त

बड़ा ही 'रोमांटिक' खयाल है, लेकिन कितना भयानक। क्योंकि श्यामला के साथ अगर मुझे जिंदगी बसर करनी है तो न मालूम कितने ही भगवे खद्दर कुरते वालों से मुझे लड़ना पड़ेगा, जी कड़ा करके लड़ाइयाँ मोल लेनी पड़ेंगी और अपनी आमदनी के जरिए खत्म कर देने होंगे। श्यामला का क्या है! वह तो एक गाँधीवादी कार्यकर्ता की लड़की है, आदिवासियों की उस कुल्हाड़ी-जैसी है जो जंगल में अपने बेईमान और बेवफा साथी का सिर धड़ से अलग कर देती है। बारीक बेईमानियों का सूफियाना अंदाज उसमें कहाँ! किंतु फिर भी आदिवासियों जैसे उस अमिश्रित आदर्शवाद में मुझे आत्मा का गौरव दिखाई देता है, मनुष्य की महिमा दिखाई देती है, पैने तर्क की अपनी अंतिम प्रभावोत्पादक परिणति का उल्लास दिखाई देता है-और ये सब बातें मेरे हृदय का स्पर्श कर जाती हैं। तो, अब मैं इसके लिए क्या करूँ, क्या करूँ!

और अब मुझे सज्जायुक्त भद्रता के मनोहर वातावरण वाला अपना कमरा याद आता है... अपना अकेला धुँधला-धुँधला कमरा। उसके एकांत में प्रत्यावर्तित और पुन:प्रत्यावर्तित प्रकाश कोमल वातावरण में मूल-रश्मियाँ और उनके उद्गम स्त्रोतों पर सोचते रहना, खयालों की लहरों में बहते रहना कितना सरल, सुंदर और भद्रतापूर्ण है। उससे न कभी गरमी लगती है, न पसीना आता है, न कभी कपड़े मैले होते हैं। किंतु प्रकाश के उद्गम के सामने रहना, उसका सामना करना, उसकी चिलचिलाती दोपहर में रास्ता नापते रहना और धूल फाँकते रहना कितना त्रास-दायक है। पसीने से तरबतर कपड़े इस तरह चिपचिपाते हैं और इस कदर गंदे मालूम होते हैं कि लगता है... कि अगर कोई इस हालत में हमें देख ले तो वह बेशक हमें निचले दर्जे का आदमी समझेगा। सजे हुए टेबल पर रखे कीमती फाउंटेन पेन-जैसे नीरव-शब्दांकन-वादी हमारे व्यक्तित्व जो बहुत बड़े ही खुशनुमा मालूम होते हैं-किन्हीं महत्वपूर्ण परिवर्तनों के कारण-जब वे आँगन में और घर-बाहर चलती हुई झाड़ू जैसे काम करने वाले दिखाई दें, तो इस हालत में यदि सड़क-छाप समझे जाएँ तो इसमें आश्चर्य की ही क्या बात है! लेकिन मैं अब ऐसे कामों की शर्म नहीं करूँगा, क्योंकि जहाँ मेरा हृदय है, वहीं मेरा भाग्य है!

बाल मंच का पृष्ठ

इस पृष्ठ में श्रमयोग के ``प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान'' से निकली जानकारियों के साथ-साथ बाल मंच की गतिविधियों एवं बाल मंच के सदस्यों की अभिव्यक्तियों को स्थान दिया जाता है। एवं बच्चों से सम्बन्धित लेखन को स्थान दिया जाता है।

-सम्पादक

रचनात्मक महिला मंच द्वारा मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

रचनात्मक महिला मंच हर साल पर्यावरण दिवस मनाता है। परन्तु इस बार के पर्यावरण दिवस को मनाने का तरीका अलग था। इस बार रचनात्मक महिला मंच की सल्ट व नैनीडांडा ईकाई के सभी समूहों की सदस्याओं द्वारा अपने-अपने गाँव में पर्यावरण दिवस मनाया। इस कार्यक्रम में सिर्फसमूह की सदस्याओं ने ही नहीं अपितु गाँव के अन्य लोगों ने भी प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में बाल मंचो की भागीदारी भी खूब रही। 5 जून को लगभग 100 गाँवों में एक साथ इसे मनाया गया।

इस बार के कार्यक्रम को पॉलीथीन के बारे में जागरूकता व नौलों की साफ-सफाई पर केन्द्रित करने का निर्णय लिया गया था। बच्चों ने अपने स्तर पर गाँव में लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया। जिसमें बच्चों ने ग्रामीणों को बताया कि पॉलिथीन कैसे नुकसानदायक है। गाँव में कूड़ा डालने के लिए गड्ढे भी तैयार किये गये। बच्चों और महिलाओं ने मिल कर नौलों और नौले तक जाने के रास्तों को मिलकर साफ किया। उन्होंने गाँव में संदेश दिया कि नौले हमारे पूर्वजों की देन हैं। इन्हे बनाये रखना बहुत जरूरी हैं। कई गाँवों में यह दिवस पूरे माह मनाया गया। जून के पूरे माह महिलाओं ने अपने प्राकृतिक स्रोतों की साफ-सफाई की।

(देर से प्राप्त खबर)

मानव सभ्यताओं का ज्ञान-विज्ञान-7

शंकर दत्त, श्रमयोग

भोजन खोजी मानव को इतिहासकारों ने दो तरह से देखा हैं। एक पक्ष का कहना हैं कि सेपियन्स एक हिंसक जीव की तरह विकसित हुआ है। जबकि दूसरे पक्ष का तर्क है कि विकास के क्रम में सेपियन्स अपने सहोदरों के साथ हिंसक नहीं था। इतिहासकार, जीवाश्म विज्ञान के आधार पर भोजन खोजी मानव के हिंसक या अहिंसक होने का तर्क देते हैं। पुरातत्व एवं जीवाश्म विज्ञान, कंकालों के समूह का अध्ययन कर तर्क देता है कि खेती क्रान्ति से पहले भी सेपियन्स हिंसक था, वहीं चिकित्सा विज्ञान इस बात की पुष्टि नहीं करता। उनका अध्ययन बताता है कि खेती क्रान्ति से पूर्व भोजन खोजी मानव में एक प्रतिशत से भी कम की मृत्यु आपसी हिंसा में हुई है।

खेती क्रान्ति के बाद यह प्रतिशत बढ़ता हैं। लेकिन फिर भी यह बहुत ही कम था। जीवाश्मों के अध्ययन से पता चलता है कि खेती क्रान्ति के बाद के शुरुआती काल में मानव की 98 प्रतिशत से अधिक मौतों का कारण मानव-वन्यजीव संघर्ष था। कंकालों के ढाचों में जिस तरह के निशान मिले हैं उनमें मानव-मानव संघर्ष से मृत्यु के प्रमाण कम ही हैं। कुछ जीव एवं कृषि वैज्ञानिको का मानना है कि उस दौर में संसाधनों और भोजन के लिए वर्ग संघर्ष की सम्भावना कम ही लगती हैं। कुछ विचारकों ने यह भी कहा हैं कि कृषि क्रान्ति ने भोजन खोजी मानवों में आपसी सहयोग को बढ़ाया। आज भी आदिवासी क्षेत्रो जहां संसाधनों पर सामुदाय का बराबरी का हक हैं। वहां आपसी हिंसा की घटनाएं बहुत कम हैं।

जीव-विज्ञान, जीवाश्म विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के तर्क संगत अध्ययनों को अगर मिलाया जाय तो पता लगता है कि हिंसा और मानव संघर्ष तब बढ़ा जब भोजन खोजी मानव संसाधनों को निजी सम्पत्ति मानने लगा। इसकी शुरुआत कृषि क्रान्ति के कई वर्षों बाद होती हैं और यहां से एक नई क्रान्ति का जन्म होता हैं। वर्ग संघर्ष का.....

किताब-'सेपियन्स' और 'आग से अन्तरिक्ष तक' पर आधारित

क्रमशः

ऊँटों का बटवारा

एक गाँव में एक व्यक्ति के ऊँट थे। एक दिन उस व्यक्ति की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद उसकी लिखी हुई वसीयत पड़ी गई, जिसमें लिखा था कि मेरे 19 ऊँटों में से मेरे आधे ऊँट मेरे बेटे को दिए जाएं और 19 ऊँटों में से एक चौथाई मेरी बेटी को दे दिए जाएं। उन्हीं 19 ऊँटों में से 5 हिस्सा मेरे नौकर को भी दे दिए जाए। इस बँटवारे को सुनकर सारे गांव वाले बड़े चक्कर में पढ़ गए कि ये कैसा बटवारा है? 19 ऊँटों का आधा हिस्सा करने का मतलब एक ऊँट को काटना पड़ेगा फिर तो ऊँट ही मर जायेगा। और चलो एक ऊँट को काट भी दिया जाय तो बचे 18 ऊँट तो उनका 1/4 साढ़े चार-साढ़े चार, फिर एक ऊँट को काटना पड़ेगा। ये बात सोचकर सभी गांव वाले बड़ी उलझन में थे। फिर पड़ोस के गांव से एक बुद्धिमान व्यक्ति को बुलवाया गया।

वह बुद्धिमान व्यक्ति अपने ऊँट पर चढ़कर आया। उसने गांव वालों की सारी समस्या सुनी फिर उसने थोड़ा दिमाग लगाया और बोला- इन 19 ऊँटों में मेरा ऊँट भी मिलाकर इनको बँटवारे में बाँट दो। सब गांव वालों ने सोचा कि एक तो मरने वाला पागल था, जो ऐसी वसीयत लिख कर चला गया और अब दूसरा पागल आ गया जो बोलता है कि उनमें मेरा ऊँट भी मिलाकर बाँट दो। फिर भी सब गांव वालों ने सोचा कि इसकी मर्जी हमें क्या हर्ज है। फिर बुद्धिमान व्यक्ति ने बटँवारा करना शुरू किया- 19+1 = 20 हुए। 20 का आधा हिस्सा 10 ऊँट बेटे को दे दिए, और 20 का चौथाई हुआ 5, उसकी बेटी को 5 ऊँट दे दिए। 20 का पाँचवा हिस्सा 4 हुआ अत: और 4 ऊँट उसके नौकर को दे दिए। कुल मिलाकर 10+5+4 = 19 और बच गया 1 ऊँट जो बुद्धिमान व्यक्ति का था उसे लेकर वह अपने गांव लौट गया। इस तरह एक ऊँट मिलाने से बांकी 19 ऊँटों का बंटवारा सुख-शांति से हो गया।

यह कहानी योगेश उपाध्याय, कक्षा 9, गांव-सकरखोला ने भेजी है।

बरसात का मौसम आया

दीपा देवी
साक्षी स्वयं सहायता समूह

सभी भाई-बहिनों को मेरा प्यार भरा नमस्कार।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि अब बरसात का मौसम शुरू हो गया है। यह निरन्तर दो माह तक निश्चित रूप से चलेगा। जी हाँ यह श्रावण मास से लेकर भाद्रपद मास तक चलेगा। पहाड़ों में इन महीनों में बहुत बारिश होती है। इसके साथ-साथ बारिश के लगातार होने के कारण अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ता हैं। अनेक बीमारियां उत्पन होती हैं जैसे सर्दी, जुखाम, खांसी, पेटदर्द, हाथ-पैरों में दर्द, बुखार, फोड़े-फुन्सी अनेक बीमारी होती हैं। इसलिये हमारे लिए सबसे जरूरी है कि हमें स्वयं ही सावधानी बरतने की आवश्यकता है। पानी को उबालकर पीना, खाना हमेशा ताजा खाना, ठण्डी सब्जियों में मैथी, अदरक का प्रयोग करना हमें कई तकलीफों से बचा सकता है। यदि हम स्वस्थ रहेंगें तो अपने परिवार का ध्यान भी रख पायेंगे।

इसके साथ ही यात्रा करते समय हमें अत्यधिक सावधानी रखने की आवश्यकता है। बरसात के दिनों में अत्यधिक बारिश होने के कारण सड़कों में मलवा एकत्रित हो जाता है तथा गाड़-गधेरे अपना रौद्र रूप धारण कर लेते हैं जिससे परेशानी हो जाती है। इस मौसम में सभी जगह हरियाली छाई रहती हैं। साथ ही कोहरा भी फैला रहता हैं। जिस कारण से मार्ग में आने-जाने में बहुत ही दिकक्तों का सामना करना पड़ता है। रास्ते साफन होने के कारण जंगली जानवरों का भय भी बना रहता है। इसलिये बहुत ही आवश्यक है कि हमें बरसात के मौसम में अपने सभी रास्तों की साफ-सफाई करनी चाहिये ताकि आने-जाने में बच्चों, जवानों, वृद्धों तथा पालतू जानवरों सभी को इधर-उधर आने-जाने में कोई दिक्कत न हो।

मेरा गाँव बहुत अच्छा है

विशाल नेगी, नदोली

मेरा नाम विशाल नेगी है। मेरा गाँव नदोली है। हमारे गाँव में पानी, हवा, पेड़-पौधें, शुद्ध वातावरण और सभी सुख-सुविधाएं हैं। हमारे गाँव में एक जंगल है। वहां बहुत पेड-पौधें, जानवर व पक्षी हैं। जैसे तेंदुआ, बाघ, हिरन, खरगोश, बंदर, लंगूर आदि। पक्षी में कबूतर, तोता, कौआ, बुलबुल, कोयल आदि। हमारे गाँव के ऊपर एक मंन्दिर है, जहां हम पूजा-पाठ करने जाते हैं। हमारे गाँव में सबके घर में पालतू जानवर हैं जैसे भैंस, गाय, बछड़ा, बैल, भेड़, बकरी, मुर्गी, घोड़ा आदि। हमारे गाँव में बहुत अच्छे-अच्छे रास्ते हैं। मुझे मेरा गाँव बहुत अच्छा लगता है। मेरे गाँव से पहाड़ दिखाई देते हैं। वहाँ हमें बहुत अच्छा लगता है।

यदि आप समाज में बदलाव का स्वप्न देखते हैं। यदि आप समाज सेवा का कार्य करना चाहते है।

इसके लिए श्रमयोग आपको प्रशिक्षित करने हेतु उत्सुक है।

यदि आप

1. सल्ट या नैनीडांडा विकास खण्ड के निवासी हैं।
2. आप 18 वर्ष की उम्र पूर्ण कर चुके हैं।
3. आप इण्टमीडिएट की परीक्षा पास कर चुके हैं।
4. आप की माँ रचनात्मक महिला मंच की सदस्या हैं।

हम आपको श्रमयोग में एक वर्ष के प्रशिक्षण हेतु आमंत्रित करते हैं। इसके लिए आप अपना आवेदन पत्र 31 अगस्त 2022 तक श्रमयोग के हिनौला कार्यालय, वाट्सएप नम्बर 9761477705 या shramyog@gmail.com में भेज सकते हैं।

प्रशिक्षण हेतु चयन लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर किया जाऐगा।

अधिक जानकारी के लिए निम्न फोन नं0 पर सम्पर्क करें:

9761477705 (समय प्रात: 10 से 11 तक)

टीकाकरण

कोविड से बचाव हेतु सबसे सुरक्षित हथियार

टीके की कार्य प्रणाली:

यह शरीर के अंदर रोगों से लड़ने वाली प्रक्रिया को बढ़ाता है एंव वायरस से लड़ने के लिए शरीर में एन्टीबॉडी बनाता है। टीकाकरण गंभीर संक्रमण से बचाव करता है। टीकाकरण से बड़ी संख्या में लोगों को कोरोना से बचाया जा सकता है।

टीकाकरण पश्चात लक्षण:

टीके से कुछ लोगों पर सामान्य सा रिएक्सन हो सकता है। जैसे बांह या सिर में दर्द होना, हल्का बुखार आना, ठंड, थकान या कमजोरी महसूस होना, सिर चकराना या मांसपेशियों में दर्द होना। परंतु यह सब थोडे समय में ही ठीक हो जाता है।

विशेष सावधानी:

ऐसे व्यक्ति जिन्हें पहले कभी रक्त श्राव की समस्या हुई हो, खून की कमी हो, किसी प्रकार का रक्त विकार हो या खून में प्लेटिलेट्स की संख्या कम हो उनको टीकाकरण के लिए किसी डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। आवश्यकता होने पर खून जाँच कराऐं और उसके बाद डॉक्टर की सलाह के अनुसार टीका लगवाये।

कोरोना का टीका कब लगवाना चहिए:

- संक्रमित व्यक्तियों को ठीक होने का इंतजार करना आवश्यक है, संक्रमण में टीका लगवाना हानिकारक साबित हो सकता है। ठीक होने के 12 सप्ताह बाद ही टीका लगवाना सबसे उपयुक्त होता है।
- टीकाकरण दो बार करवाना होता है। पहले टीके के बाद 12 से 16 सप्ताह के बाद ही दूसरा टीका लगवाना चाहिए।
- यदि पहला टीका लगने के बाद संक्रमण हो जाता है तो ठीक होने के 12 सप्ताह बाद ही दूसरा टीका लगवाना चाहिए।
- महिलाओं को मासिक धर्म के समय या उसके तुरंत पहले या तुरंत बाद (2 से 3 दिन अंतर तक) टीका नहीं लगवाना बेहतर होता है। इस समय शरीर में कमजोरी महसूस होती है।
- गर्भवती महिलाओं को टीका नहीं लगाना चाहिए।
- स्तनपान कराती मातायें टीका लगवा सकती हैं।

जन जागरुकता अभियान
लोक विज्ञान संस्थान, देहरादून

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक शंकर दत्त ने नौटियाल प्रिंटर्स ग्राम माजरी माफी, मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से मुद्रित कर ग्राम श्यामपुर, पो0 अम्बीवाला, प्रेमनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।

सम्पादक-अजय कुमार

सभी पद अवैतनिक हैं।

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा)